खेमराज श्रीकृष्णदास प्रकाशन,
बम्बई

॥ श्रीः ॥

गणेशकविविरचितः-

जातकालंकारः।

वेरीपुरनिवासिबुधवसतिरामशास्त्रिकृत-

भाषाटीकासहितः।

मुद्रक एवं प्रकाशक:

खेमराज श्रीकृष्णदास,

अध्यक्ष : श्रीवेंकटेश्वर प्रेस,

खेमराज श्रीकृष्णदास मार्ग, मुंबई - ४०० ००४.

श्रीः ।

अथ जातकालंकारविषयानुक्रमणिका ।

विषय.	पृष्ठांक.
संज्ञाध्यायः १.	
मङ्गलाचरणम्	१
ग्रंथप्रयोजनम्	२
तन्वादिभावाः	४
तन्वादिसंज्ञाः	,,
ग्रहाणां शत्रुमित्रसमसंज्ञा	७
ग्रहदृष्टिः	,,
भावाध्यायः २.	
तनुभावफलम्	९
शुभयोगाः	१०
धनभावफलम्	११
तृतीयभावफलम्	१२
चतुर्थभावफलम्	१३
पञ्चमभावफलम्	१५
संतानाभावयोगः(श्लोक१२)	१६
रिपुभावफलम्	१९
विवाहयोगः	२२
गर्भभावयोगः	२४
अष्टमभावयोगः	,,
नवमभावयोगः	२६
दशमभावयोगः (श्लोक ३१)	२८
एकादशभावयोगः	२९
द्वादशभावयोगः	३१
योगाध्यायः ३.	
क्रोधदुर्बलताव्यभिचारादियोगः	३३
कुष्ठादिरोगयोगः	३६
खंजादिरोगः	३८
सुबुद्धिदुर्बुद्धियोगः	,,
हृद्रोगादियोगः	३९
व्रणादियोगः	४०
उच्चदेहादियोगः	४१
जारादियोगः	४२
अपकीर्तियोगः	४३
स्त्रीप्रीतियोगः	४४
स्वल्पकामयोगः	४५
अल्पनेत्रकाणादियोगः	४६
वामनयोगदद्रुरोगयोगः	४७
प्लीहादिरोगयोगः	,,

विषय.	पृष्ठांक.	विषय.	पृष्ठांक
हीनांगयोगः	४८	अल्पायुर्योगः	६२
पंग्वादियोगः	४९	स्वल्पायुर्योगः	६३
षंढयोगः	५०	मध्यायुर्योगः	६४
अंडवृद्धियोगः	५१	भावाध्यायः ६.	
राजबंधनयोगः	५२	द्रव्यादियोगः	६९
देहदुर्गंधियोगः	,,	आरोग्यादियोगः	७०
विषकन्याध्यायः ४.		द्यूतादियोगः	७१
विषकन्यायोगः	५४	राजयोगः	,,
विषकन्यादोषपरिहारः	५५	कार्पण्यादियोग	७२
आयुर्दायाध्यायः ५,		वंशाध्यायः ७.	
दीर्घायुर्योगः	५६	ग्रंथकर्तृवंशवर्णनम्	७४
पूर्णायुर्योगः	६०	ग्रंथपठनफलम्	७५

इति जातकालंकारविषयानुक्रमणिका समाप्ता ।

श्रीगणेशाय नमः ॥

जातकालंकारः ।

भाषाटीकासहितः ।

संज्ञाध्यायः १.

मङ्गलाचरणम् ।

सानन्दं प्रणिपत्य सिद्धिसदनं लम्बोदरं भारतीं सूर्यादिग्रहमण्डलं निजगुरुं भक्त्या हृदब्जे स्थितम् । येषामंघ्रिसरोरुहस्मरणतो नानाविधाः सिद्धयः सिद्धिं यान्ति लघु प्रयान्ति विलयं प्रत्यूहशैलव्रजाः ॥ १ ॥

श्रीगणेशं गुरुञ्चैव स्वेष्टदेवं सरस्वतीम् ।
प्रणम्य क्रियते ह्येषा भाषाटीका सुशोभना ॥

जिनके चरणकमलको स्मरण करनेसे अनेक प्रकारकी सिद्धियां शीघ्र ही परिपूर्ण होती हैं और विघ्नरूप पर्वतोंके समूह शीघ्र ही नष्ट होते हैं ऐसे गणेशजीको, सरस्वतीको, सूर्यादि ग्रहोंके मंडलको, अपने गुरुओंको, हृदयकमलमें स्थितहुए आनंदसहित रहनेवाले और सिद्धिके निलय विष्णुभगवान्‌को प्रणाम करके फिर–॥ १ ॥

सद्भावाकलितं पदार्थललितं योगाङ्ग-
लीलार्चितं श्रीमद्भागवतं शुकास्यगलितं
यच्छ्रीधरस्वामिना। सुव्यक्तं क्रियते गणेश-
कविना गाथोक्तितज्जातकं वृत्तस्रग्धरया
जनादिसुफलं ज्योतिर्विदां जीवनम् ॥ २॥

श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ (दंडकफक्किकासंस्कृत-चद्धजात जैसे श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ) श्रेष्ठ भक्तिभावोंकरके विशिष्ट, श्रवण कीर्त्तन आदि पदार्थों करके मनोहर, भक्तियोगके यम नियम आदि अंगोंकी लीला कहिये उपदेशविशेषोंकरके पूजित, ज्योतिःस्वरूप परमात्माके जाननेवालोंका तथा ब्रह्मवेत्ताओंका जीवनके कालक्षेपयोग्य ऐसा श्रीमद्भागवत पुराण श्रीधर स्वामीजीने (टीका रचके प्रगट किया है) तैसेही सद्भाव (द्वादशभावों) करके विशिष्ट, पदार्थललित (आनंदस्थानोंकरके मनोहर), योगांग कहिये ग्रहभावादिकोंकी लीलाकरके सुंदर, ज्योतिर्विद् (ज्योतिषियों) का जीवनरूप ऐसा यह गाथा दंडक उक्तिसे कहाहुआ, जन आदिकोंको सुन्दर फल कहनेवाला जातक स्रग्धराछंदसे गणेशनामक (मुझ) कविकरके सुन्दर प्रगट किया जाता है अर्थात् मैं गणेशकवि इस जातकको स्रग्धराछंदकरके रचता हूं ॥ २ ॥

यत्पूर्वं परमं शुकास्यगलितं सज्जातकं
फक्किकारूपं गूढतमं तदेव विशदं कुर्वे

गणेशोऽस्म्यहम् । दैवज्ञः सुतरां यशः-
सुखमतिः श्रीहर्षदं स्रग्धरावृत्तैश्चारु नृणां
शुभायनपदं श्रीमच्छिवानुज्ञया ॥ ३ ॥

जो पहले श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रगट हुआ (छंदरहित होनेसे) फक्किकारूप अत्यन्त गूढ उत्तम जातक है उसीको दैवज्ञ निरंतर यशसे उत्पन्नहुए सुखमें बुद्धि रखनेवाला मैं गणेशनामक कवि श्रीमान् शिवनामक गुरुकी आज्ञासे विशद (तोफा, सुंदर) लक्ष्मी और कीर्ति देनेवाले आनंदसिद्धिदायक भावोंका स्थानरूप जातकको करता हूं ॥ ३ ॥

भूयांसः सन्ति भूमौ निजमतिरचना-
शालिनः काव्यगुम्फे संख्यावन्तस्तथाऽपि
प्रचुरपरगुणानन्दलीलां भजन्ते । चञ्च-
द्गाम्भीर्यपद्माविबुधाविटपिनां जन्मसंप्राप्ति-
भूतो मर्यादां न स्वकीयां त्यजति किल
महान् रत्नधामा सरस्वान् ॥ ४ ॥

यद्यपि काव्य रचनेमें पृथ्वीतलमें अपनी बुद्धिकी रचना करनेवाले बहुतसे कविजन हैं तथापि वे कविजन विशेषकरके पराये गुणोंसे उत्पन्न हुई आनंदलीलाको भजते हैं, क्योंकि प्रकाशमान, गांभीर्य, लक्ष्मी, कल्पतरु इन्होंको उत्पन्न करने-वाला भी महान् रत्नोंका स्थान समुद्र जैसे अपनी मर्यादाको नहीं त्यागता है वैसेही महंत उत्तमजन अपनी मर्यादामें रहते हैं ४

तन्वादिभावाः ।

देहं द्रव्यपराक्रमौ सुखसुतौ शत्रुः कलत्रं मृतिर्भाग्यं राजपदं क्रमेण गदिता लाभव्ययौ लग्नतः । भावा द्वादश तत्र सौख्यशरणं देहं मतं देहिनां तस्मादेव शुभाशुभाख्यफलजः कार्यो बुधैर्निर्णयः ॥ ५ ॥

देह १, द्रव्य २, पराक्रम ३, सुख ४, सुत ५, शत्रु ६, कलत्र ७, मृति ८, भाग्य ९, राज्यपद १०, लाभ ११, व्यय १२ ये बारहों भाव क्रमकरके लग्नसे कहे हैं. तहां देहधारी जीवोंके देह (शरीर) ही सुखका आश्रय कहा है. इसलिये पण्डितजनोंको उस देहभावसे अर्थात् लग्नसे ही शुभ अशुभ फलका निर्णय करना चाहिये ॥ ५ ॥

तन्वादिसंज्ञाः ।

लग्नं मूर्तिस्तथाऽङ्गं तनुरुदयवपुः कल्पमाद्यं ततः स्वं कोशार्थाख्यं कुटुम्बं धनमथ सहजं भ्रातृदुश्चिक्यसंज्ञम् । अम्बापातालतुर्यं हिबुकगृहसुहृद्वाहनं यानसंज्ञं बन्ध्वाख्यं चाम्बु नीरं जलमथ तनयं बुद्धिविद्यात्मजाख्यम् ॥ ६ ॥

लग्न, मूर्ति, अंग, तनु, उदय, वपु, कल्प, आद्य ये लग्न (तनुभाव) के नाम हैं. स्व, कोश, अर्थ, कुटुंब, धन इन

नामोंवाला दूसरा भवन है. सहज, भ्रातृ, दुश्चिक्य ये तीसरे भवनकी संज्ञा हैं. अंबा, पाताल, तुर्य, हिबुक, गृह, सुहृद्, यान, बंधु, अंबु, नीर, जल ये चौथे भवनके नाम हैं. तनय, बुद्धि, विद्या, आत्मज नामक--॥ ६ ॥

वाक्स्थानं पञ्चमं स्यात्तनुजमथ रिपुद्वेष-
वैरिक्षताख्यं षष्ठं जामित्रमस्तं स्मरमदन-
मदद्यूनकामाभिधानम् । रन्ध्रायुश्छिद्र-
याम्यं निधनलयपदं चाष्टमं मृत्युरन्यद्
गुर्वाख्यं धर्मसंज्ञं नवममिह शुभं स्यात्तपो-
मार्गसंज्ञम् ॥ ७ ॥

वाक्स्थान ये पांचवें घरके नाम हैं. द्वेष, वैरी, क्षत ये छठे घरके नाम हैं. जामित्र, अस्त, स्मर, मदन, मद, द्यूत, काम ये सातवें घरके नाम हैं. रंध्र, आयु, छिद्र, याम्य, निधन, लय, मृत्यु ये आठवें घरके नाम हैं. गुरुनामक, धर्मनामसे प्रसिद्ध और शुभ तपोमार्ग ये नवम घरके नाम हैं ॥ ७ ॥

तातात्ज्ञामानकर्मास्पदगगननभोव्योममेषू-
रणाख्यं मध्यं व्यापारमूचुर्दशममथ भवं
चागमं प्राप्तिमायम् । इत्थं प्रान्त्यान्तिमाख्यं
मुनय इह ततो द्वादशं रिःफमाहुर्याह्यं बुद्धा
प्रवीणैर्यदधिकममुतः संज्ञया तस्य तच्च ॥ ८ ॥

तात, आज्ञा, मान, कर्म, आस्पद, गगन, नभ, व्योम, मेषूरण, मध्यम, व्यापार ये दशवें घरके नाम कहे हैं. ग्यारहवें घरको आगम, प्राप्ति, आय इन नामोंसे कहते हैं और प्रांत्यांतिमनामक अर्थात् प्रांत्य, अंतिम, रिःफ ये बारहवें घरके नाम हैं और इस कहेहुए नामसमुदायसे जो अधिक नाम दीखें वह पण्डितजनोंने उसी २ नामके पर्यायसे जानके ग्रहण कर लेना; जैसे वित्त ऐसा नाम हो तो धनका पर्याय होनेसे दूसरा भवन जान लेना ॥ ८ ॥

आद्यं तुर्यं कलत्रं दशममिह बुधैः केन्द्रमुक्तं त्रिकोणं पुत्रं धर्माख्यमुक्तं पणफरमुदितं मृत्युलाभात्मजार्थम् । धर्मं चापोक्लिमाख्यं व्ययरिपुसहजं कण्टकाख्यं हि केन्द्रं चैतच्चातुष्टयं स्यात्त्रिकमिह गदितं वैरिरिःफान्तकाख्यम् ॥ ९ ॥

इस शास्त्रसे पण्डितजनोंने आद्य १ चतुर्थ ४ सप्तम ७ दशम १० इन चार घरोंकी केन्द्र संज्ञा कही है और कोई केन्द्र (१ । ४ । ७ । १० । इन चार घरों) को ही कंटक नाम कभी कहते हैं. पांचवां ५ नवम ९ घरको त्रिकोण कहते हैं. आठवां ८ ग्यारहवां ११ पांचवां ५ दूसरा २ इन घरोंको पणफर कहते हैं. नवम ९ बारहवां १२ छठा ६ तीसरा ३ इन घरोंको आपोक्लिम कहते हैं और छठा ६ बारहवां १२ आठवां ८ इन घरोंकी त्रिकसंज्ञा कही है ॥ ९ ॥

ग्रहाणां शत्रुमित्रसमसंज्ञा ।

चन्द्रेज्याक्षितिजा रवीन्दुतनयौ गुर्विन्दुसूर्याः
क्रमाच्छुक्रार्कौ रविचन्द्रभूमितनया ज्ञार्की
सितज्ञौ मताः । अर्कादेः सुहृदः समा अथ
बुधः सर्वे हि शुक्रार्कजौ भौमाचार्ययमा
यमः कुजगुरू पूज्यः परे वैरिणः ॥ १० ॥

चंद्रमा, बृहस्पति, मंगल ये सूर्यके मित्र हैं, बुध समान है. अन्य (शुक्र, शनि, राहु ये) शत्रु हैं और सूर्य, बुध चन्द्रमाके मित्र हैं, अन्य सब ग्रह सम हैं (परन्तु राहु तो शत्रुही जानना) और बृहस्पति, चन्द्रमा, सूर्य मंगलके मित्र शुक्र, शनि सम हैं, अन्य (बुध) शत्रु है और शुक्र, सूर्य बुधके मित्र हैं. मंगल, बृहस्पति शनि ये समान हैं, चन्द्रमा शत्रु है और सूर्य, चंद्रमा, मंगल ये बृहस्पतिके मित्र हैं, शनि सम है, अन्य शत्रु हैं और बुध शनिके मित्र है, मंगल, बृहस्पति सम हैं, अन्य शत्रु हैं. शुक्र, बुध शनिके मित्र हैं, बृहस्पति सम है, अन्य कहिये बाकी रहे सूर्य, चन्द्रमा, मंगल ये शत्रु हैं ॥ १० ॥

ग्रहदृष्टिः ।

तृतीयदशमे ग्रहो नवमपञ्चमेष्टांबुनी क्रमा-
च्चरणवृद्धितः स्मरगृहं ततः पश्यति । कुजः
सितबुधौ शशी रविबुधौ सितक्ष्मासुतौ गुरु-
र्यमशनी गुरुर्भवनपा इमे मेषतः ॥ ११ ॥

तीसरे दशवें घर सब ग्रह एक चरण दृष्टिसे देखते हैं, नवम पांचवें दो चरण दृष्टिसे देखते हैं. आठवें चौथे तीन चरण दृष्टिकरके देखते हैं और सातवें घरमें स्थित सब ग्रह चार-पद दृष्टिसे अर्थात् पूर्णदृष्टिसे देखते हैं (अन्य ग्रन्थका यह भी मत है कि, तीसरे दशवें शनि, नवम पांचवें बृहस्पति, चौथे आठवें मंगल पूर्ण दृष्टिसे ही देखते हैं) और मंगल १, शुक्र २, बुध ३, चंद्रमा ४, सूर्य ५, बुध ६, शुक्र ७, मंगल ८, बृहस्पति ९, शनि १०, शनि ११, बृहस्पति १२ ऐसे क्रमसे मेष आदि राशियोंके ये स्वामी कहे हैं. तहां मंगल मेषका स्वामी शुक्र, वृषका स्वामी इसी क्रमसे १ आदि अंक राशि-योंके समझना ॥ ११ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलंकाराख्ये जातके मंजुलेऽस्मिन् । संज्ञाध्यायः श्रीग-णेशेन वर्यैर्वृत्तैर्दिग्भिः संयुतोऽयं प्रणीतः ॥१२॥

इति श्रीजातकालंकारे प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

श्रीगणेशनामक कविने मनोहर छंदोंकरके रचेहुए जातका-लंकारनामक इस ग्रंथमें श्रेष्ठ दश श्लोकोंकरके यह प्रथम अध्याय रचा है ॥ १२ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

भावाध्यायः २.

शुकाननसरोरुहाद्गलितमत्र भूमीतले
फलं परमसुन्दरं सकलमाकलय्याधुना ।
ब्रवीमि तनुभावतः प्रवरदैववित्तोषदं
यदत्र मम चापलं किमपि तत्क्षमध्वं बुधाः ॥१

मैं गणेशकवि अब श्रीशुकदेवजीके मुखसे प्रचलित होके यहां पृथ्वीपर शिष्यप्रशिष्यद्वारा प्राप्त हुए परम सुंदर संपूर्ण फलको विचारके उत्तम दैवज्ञोंकी प्रसन्नताके वास्ते तनुभावसे लेके सब भावोंको कहता हूं. हे पंडितजनो ! जो यहां कुछ चपलता (न्यूनता) हो उसको क्षमा करो ॥ १ ॥

तनुभावफलम् ।

देहाधीशः स पापो व्ययरिपुमृतिगश्चेत्तदा
देहसौख्यं न स्याज्जन्तोर्निजर्क्षे व्ययरिपु-
मृतिपस्तत्फलस्यैव कर्ता ।मूर्तौ चेत् क्रूर-
खेटस्तदनु तनुपतिः स्वीयवीर्येण हीनो
नानातङ्काकुलः स्याद्व्रजति हि मनुजो
व्याधिमाधिप्रकोपम् ॥ २ ॥

लग्नका स्वामी पापग्रहसे युक्त हो अथवा बारहवें १२ छठे ६ आठवें ८ घरमें पडा हो तो उसको देहका सुख नहीं होवे और द्वादशभावका पति बारहवें घर हो, छठे घरका पति छठे

घर हो आठवे घरका पति आठवें घर हो तो भी यही फल करनेवाला है अर्थात् देहसुख नहीं हो. (परंतु बृहज्जातकमें यह शुभयोग कहा है, इसलिये दूसरा अर्थ यह जानना कि, लग्नपति पापग्रहसे युक्त हो अथवा १२, ६, ८ इन स्थानोंके स्वामियोंके संगमें ही पडा हो तो देहसुख नहीं जानना और लग्नमें क्रूरग्रह हो, लग्नका पति अपने बलकरके हीन हो तो वह मनुष्य अनेक पीडा, रोग, चिंताओंको प्राप्त होवे) ॥ २ ॥

शुभयोगाः ।

अङ्गाधीशः स्वगेहे बुधगुरुकविभिः संयुतः केन्द्रगो वा स्वीये तुङ्गे स्वमित्रे यदि शुभभवने वीक्षितः सत्त्वरूपः । स्यान्नूनं पुण्यशीलः सकलजनमतः सर्वसंपन्निधानं ज्ञानी मन्त्री च भूपः सुरुचिरनयनो मानवो मानवानाम् ॥ ३ ॥

लग्नका पति लग्नमें हो अथवा बुध, बृहस्पति, शुक्रसे युक्त होके केंद्रमें पडा हो अथवा उच्चका हो अथवा अपने मित्रके घरमें हो अथवा शुभगृह अर्थात् नववें ९ घरमें हो वा शुभ ग्रहसे दृष्ट हो तो वह मनुष्य मनुष्योंके मध्यमें राजा हो अथवा मंत्री हो, सब संपत्तियोंका स्थान हो, ज्ञानी और सत्त्वगुणी रूपवाला सुंदर नेत्र आदि उत्तम शरीरवाला पुण्यवान् संपूर्ण जनोंकरके मान्य होवे ॥ ३ ॥

लग्ने क्रूरेऽथ याते खलखचरगृहं लग्ननाथे
रवीन्दू क्रूरान्तस्थानसंस्थावथ दिनपानिशा-
नाथयोर्द्यूनयायी । भूमीपुत्रस्तु पृष्ठादुदय-
मधिगतश्चन्द्रजश्चेन्मनस्वी स्यादन्धो दुष्ट-
कर्मा परभवनरतः पूरुषः क्षीणकायः ॥ ४ ॥

लग्नका पति क्रूरग्रहकी राशिपर स्थित हो अथवा सूर्य । चन्द्रमा क्रूरग्रहोंके मध्य (बीच) में स्थित हों यह दूसरा योग हुआ और सूर्यसे वा चन्द्रमासे सातवें स्थानमें मंगल हो और बुध पिछली राशिपर स्थित होवे तो इन तीन योगोंमें एक योगके भी होनेसे उदार मनवाला अंधा दुष्टकर्म करनेवाला पराई स्त्रीसे रमण करनेवाला क्षीण शरीरवाला मनुष्य होवे यहां उदार चित्तवाला चन्द्रमाके बलकी अपेक्षासे जानना॥४॥

धनभावफलम् ।

कोशाधीशः स्वराशौ सुरगुरुसहितः सर्व-
संपत्प्रदः स्यात् केन्द्रे वाथ त्रिके चेद्भवति
हि मनुजः क्लेशभाग् द्रव्यहीनः । स्वान्त्या-
धीशौ त्रिकस्थौ कवितनुपयुतौ स्यात्तदा
नेत्रहीनश्चन्द्रः पापेन युक्तो धनभवनगतः
शुक्रयुङ् नेत्रहीनः ॥ ५ ॥

धनस्थानका पति बृहस्पतिसे युक्त होके अपनी राशिका हो अथवा केंद्रस्थानमें स्थित हो तो संपूर्ण संपत्तियोंको देने-

वाला होता है और बृहस्पतिसे युक्त होके छठे, आठवें, बारहवें घरमें हो तो द्रव्यसे हीन होवे और धनस्थानका तथा बारहवें घरका पति शुक्र और बृहस्पतिसे युक्त होके पडे हों तो जन्मनेवाला अंधा होवे और शुक्र तथा पापग्रहसे युक्त होके चन्द्रमा धनभवनमें पडे तो भी वह मनुष्य अन्धा हो ॥ ५ ॥

शुक्रः सेन्दुस्त्रिकस्थो जनुषि निशि नरः प्राप्नुयादन्धकत्वं जन्मान्धः सार्कशुक्रस्तनुभवनपतिः स्यात्तदानीं मनुष्यः । एवं तातानुजाम्बासुतनिजगृहिणीस्थाननाथाः स्थिताश्चेदादेश्यं तत्र तेषां प्रवरमतियुतैरन्धकत्वं तदानीम् ॥ ६ ॥

चन्द्रमासहित हुआ शुक्र छठे आठवें बारहवें घरमें पडा हो तो रात्रिमें अन्धा रहनेवाला (रतौंधीवाला) जन हो. जो यदि सूर्य शुक्रसे युक्त हुआ लग्नेश ६ । ८ । १२ घरमें हो तो जन्मांध होवे. इसी प्रकारसे पिता, भ्राता, पुत्र, स्त्री, माता इन स्थानोंके स्वामी भी जो सूर्य, चन्द्र, शुक्र इनसे युक्त हो ६ । ८ । १२ इन घरोंमें हों तो ये भी अन्धे बताने, पण्डितजनोंने ऐसा विचार करना चाहिये ॥ ६ ॥

तृतीयभावफलम् ।

भ्रातृस्थानेशभौमौ व्ययारिपुनिधनस्थानगौ बन्धुहीनः स्वक्षेत्रे सौम्यदृष्टे सहजभव-

नपे मानवः स्याच्च तद्वान् । केन्द्रस्थे बन्धु-
सौख्यं शुभविहगयुते स्याददभ्रं नराणां
पापैश्चेदन्यथैतत्तदनु निजधिया ज्ञेयमित्थं
समस्तम् ॥ ७ ॥

भ्रातृस्थानका पति और मङ्गल बारहवें, छठे, आठवें घर पडें तो जन्मनेवाला जन बन्धुसे हीन होवे. यदि वह तीसरे घरका पति अपने घरमें पडा हो अथवा शुभग्रहसे दृष्ट हो तो बन्धुसे युक्त होवे. यदि तृतीय घरका पति केंद्रस्थानमें हो शुभग्रहोंसे युक्त होवे तो बन्धु (भाई) का सुख बहुत होवे और पापग्रहोंसे युक्त होके केन्द्रस्थान (१ । ४ ।७। १०) में हो तो बन्धुका सुख नहीं हो. ऐसा पंडितजनोंने सम्पूर्ण हाल अपनी बुद्धिसे विचारके कहना ॥ ७ ॥

चतुर्थभावफलम् ।

पातालेशः स्वराशौ शुभखचरयुतो भाग्य-
नाथेन युक्तः सामन्तः स्यात्ततश्चेत्सुरपति-
गुरुणा वाहनेशस्तनुस्थः । संदृष्टो राज-
पूज्यस्तदनु च हिबुकाधीश्वरो लाभसंस्थो
यानं पश्यन्नराणां निवहमभिमतं वाहनानां
प्रदत्ते ॥ ८ ॥

चौथे घरका पति अपनी राशिपर शुभग्रहसे और नवम घरके स्वामीसे युक्त होके पडे तो राजा हो, फिर यदि चौथे

घरका पति लग्नमें स्थित हो और बृहस्पतिसे पूर्ण दृष्टि करके दृष्ट हो तो राजपूज्य होवे. यदि यही चौथे घरका पति बृहस्पतिसे दृष्ट हुआ ग्यारहवें घरमें स्थित हो और चौथे घरको देखता हो तो मनुष्योंके वास्ते हस्ती घोडा आदि वाहनोंका बहुत पूरा सुख देवे ॥ ८ ॥

स्वक्षेत्रे तुर्यनाथस्तनुपतिसहितः स्यादक-
स्माद्गृहाप्तिः सौहार्दं वा सुहृद्भिस्तदितर-
गृहगश्चेद्गृहालभ्ययोगः । यावन्तः पापखेटा
धनदशमगृहप्रान्त्यपैश्चेत्त्रिकस्था युक्तास्ता-
वत्प्रमाणा ज्वलनवशगताः क्लेशदाः स्युर्गृहा नुः॥

अथ गृहप्राप्ति आदि योग-चौथे घरका पति जो अपने क्षेत्र (४ घर) में लग्नपतिसे युक्त होके बैठा हो तो विनाही यत्न घर (मकान) की प्राप्ति होवे और मित्र हितकारक जनोंके संग प्रीति बढे. यदि चौथे घरके विना अन्यही घरमें हो तो गृहप्राप्तिका अभाव हो और जितने पाप ग्रह दूसरे, दशवें, बारहवें घरके स्वामीके साथ होके त्रिक(६ । ८ । १२) घरोंमें हो उतनेही घर (मकान) मनुष्यके अग्निसे जल जाते हैं इसीवास्ते दुःखदायी होते हैं ॥ ९ ॥

यावन्तो वाहनस्थाः शुभविहगदृशां गोचरा
नो भवेयुस्तावन्तो वा विरामाः परमगुण-
वतां वाहनानां नृणां स्युः । क्रूराः पश्यन्ति

यानं व्ययनिधनगताश्चेत्तदा तद्वदेव प्राज्ञै-
रादेश्यमेषां खलु शुभकरणं शान्तिकं वाह-
नानाम् ॥ १० ॥

जितने पापग्रह चौथे घरमें स्थित होवें और शुभग्रहोंकरके दृष्ट भी नहीं होवें तो उतनेही परम उत्तम गुणवाले वाहन (हस्ती घोडा आदि) नष्ट होवें और यदि किसीके १२ । ८ इन घरोंमें पापग्रह बैठके फिर वे पापग्रह चौथे घरको देखते होवें तो पूर्वोक्त फल अर्थात् वाहन नष्ट होवेंगे ऐसा बताना, तहां पंडित जनोंने वाहनोंकी शुभकारक शांति करना चाहिये ॥१०

पञ्चमभावफलम् ।

विद्यास्थानाधिपो वा बुधगुरुसहितश्चेत्त्रिके
वर्तमानो विद्याहीनो नरः स्यादथ नवम-
निजक्षेत्रकेन्द्रेषु तद्वान्। बालत्वं वृद्धता वा
यदि गगनसदां जन्मकाले तदा स्यात्प्रज्ञा-
मान्द्यं नराणामथ यदि विहगः स्वर्क्षगो
दोषहृत् स्यात् ॥ ११ ॥

पांचवें घरका पति अकेला अथवा बुध बृहस्पतिसे युक्त होके त्रिक (६।८।१२) इन घरोंमें पडा हो तो वह नर विद्या-हीन होवे और जो वह पंचमेश ५।९ केंद्र १।४।७।१०.इन घरोंमें हो तो विद्यावान् होवे और जन्मसमयमें बुद्धिकारक ग्रहोंकी बालसंज्ञा हो अथवा वृद्धसंज्ञा होवे तो मंदबुद्धि होवे.

यदि वही बाल वृद्ध भी अपने क्षेत्रका होवे तो मंदबुद्धिका दोष दूर होता है ॥ ११ ॥

वाक्स्थानेशो गुरुर्वा व्ययरिपुविलयस्थान-
गो वाग्विहीनश्चैवं पित्रादिकानां पतय इह
युता मूकता स्याच्च ताभ्याम्। वागीशात्प-
श्चमेशास्त्रिकभवनगतः पुत्रधर्माङ्गनाथा रन्ध्रे
द्वेष्यान्तिमस्था यदि जनुषि नृणामात्मजा-
नामभावः ॥ १२ ॥

यदि पांचवें घरका पति अथवा बृहस्पति बारहवें, छठे, आठवें स्थानमें पडा हो तो जन्मनेवाला जन गूंगा हो, इसी प्रकार पिता (दशम भाव) आदिकोंके पति पंचमेश और बृहस्पतिसे युक्त होवे ६।८।१२ घरमें होवें तो पिता आदिकोंको गूंगा बताना.यहां आदिशब्दसे भाई पुत्र आदिका स्थान देखना. बृहस्पतिकी राशिसे ६।८।१२ घरमें पंचमेश होवे और पांचवें नवम लग्नका पति जन्मलग्नकी राशिसे ६।८। १२ राशिपर होवे तो मनुष्योंके पुत्रका अभाव बताना ॥ १२ ॥

किंचित्कालं विलम्बः शुभखगसहितास्तेऽथ
कर्के सुतर्क्षे चन्द्रे कन्याप्रजावान् प्रमित-
तनयवांश्चाथ देवेन्द्रपूज्यात्। क्रूरश्चेत्पञ्च-
मस्थः सुतभवनगतः स्यात्तदाऽपत्यहीन-

श्छायापुत्रः स्वगेहाद्यदि भवति सुते सूनुरेकस्तदानीम् ॥ १३ ॥

९।९।१ घरके पति शुभग्रहोंसे युक्त होवें तो संतान उत्पन्न होनेमें कुछ कालकी देरी होवे. यदि कर्कराशिका चंद्रमा पांचवें घरमें हो तो कन्यासन्तान हो अथवा अल्प १ ही पुत्र होवे और बृहस्पतिसे पांचवें घरमें क्रूर ग्रह हो अथवा वह क्रूर ग्रह लग्नसे पांचवें घरमें होवे तो संतान नहीं हो, यदि अपनी राशिसे पांचवें घर अर्थात् २।३ का शनि होवे तो एकही पुत्र हो, पूर्वोक्त क्रूरयोग होनेसे और क्रूर दृष्टि होनेसे यह फल होते हैं ॥ १३ ॥

कुम्भे चेत्पञ्च पुत्रास्तदनु च मकरे नन्दनेऽप्यात्मजाः स्युस्तिस्रो भौमः सुतानां त्रितयमथ सुतादायको रौहिणेयः। इत्थं काव्यः शशाङ्को जनुषि च गुरुणा केवलेनैव पुत्राः पञ्च स्युः केतुराह्वोः क्रियवृषभवने कर्कटे नो विलम्बः ॥ १४ ॥

पांचवें घरमें कुंभका शनि पडा हो तो पांच पुत्र होवें और मकरका होके हो तो तीन पुत्र होवें. यदि मकरका मङ्गल ९ वें घरमें हो तो तीन पुत्र हो.जो पांचवें घरमें बुध हो तो कन्या हो ऐसे ९ वें घरमें शुक्र चन्द्रमा हो तो भी पुत्री होवे. जन्मसमय ९वें घरमें अकेलाही बृहस्पति हो तो ५ पुत्र होते हैं. जो यदि ५ वें

घरमें मेष वृष कर्क इन राशियोंके राहु केतु पडे हों तो संतान होनेमें कुछ विलम्ब नहीं हो (इससे विपरीत सब बात हो तो विलम्ब जानना) ॥ १४ ॥

पापो वा वासवेज्यः सुखभवनगतः पञ्चमे वाऽष्टमे वा शीतांशुः सन्ततेः स्यात् खगुणमितसमातुल्य एव प्रबन्धः । यावन्तः पापखेटास्तनयगृहगताः सौम्यदृष्ट्या न दृष्टास्तावद्वर्षप्रमाणो नियतमिह भवेत्सन्ततेर्वा विलम्बः ॥ १५ ॥

पाप ग्रह अथवा बृहस्पति ४ घरमें होवे अथवा ५।८ घरमें चन्द्रमा हो तो तीस वर्षतक सन्तान होनेका प्रबन्ध देरी रहे और जितने पाप ग्रह पांचवें घरमें बैठे हों शुभ ग्रहोंसे दृष्ट नहीं हों तो उतने ही वर्षोंतक निश्चय सन्तान होनेका विलंब कहना॥

तत्प्राप्तिर्धर्ममूला तदनु बुधकवी शङ्करस्याभिषेकाच्चन्द्रश्चेत्तद्वदेव त्रिदिवपतिगुरुर्मन्त्रयन्त्रौषधीनाम् । सिद्ध्या मन्दारसूर्यो यदि शिखितमसी तत्र वंशेशपूजा कार्याऽऽम्नायोक्तरीत्या बुधगुरुनवपाः क्षिप्रमेवात्र सिद्धिः १६

तिस संतानकी प्राप्ति हरिवंशश्रवण संतानगोपाल मन्त्र जप इत्यादिक धर्मसे होती है तहां ऐसा विशेष है कि, बुध

शुक्र संतानका विलम्ब करते हों तो शिवजीका अभिषेक (मन्त्रपूर्वक) करवावे. चन्द्रमा विलम्बकारक हो तो भी वही विधि कराना. जो बृहस्पति संतानका निरोधक हो तो मन्त्र यन्त्र औषधी (लक्ष्मणादि) सेवन करानेकी सिद्धिसे संतान हो. शनि, मङ्गल, सूर्य, राहु इनमें जो एक कोई प्रतिबन्धक होवे तो कुलदेवताका पूजन वेदोक्त रीतिसे करना. यहां बुध बृहस्पति ९ घरके पति हों तो (कुछ यत्नसे) शीघ्रही सिद्धि होवे ॥ १६ ॥

रिपुभावफलम् ।

षष्ठेशे पापयुक्ते तनुनिधनगते नुः शरीरे व्रणाः स्युश्चादेश्यं तज्जनित्रीजनकसुतवधू-बंधुमित्रादिकानाम् । इत्थं तत्स्थानगामी शिरसि दिनमणिश्चानने शीतभानुः कण्ठे भूमीतनूजो हृदि शशितनयो वाक्पति-र्नाभिमूले ॥ १७ ॥

पापग्रहसे युक्तहुआ छठे घरका पति लग्नमें वा आठवें घरमें बैठा हो तो मनुष्यके शरीरमें व्रण होवें, इसी प्रकार माता, पिता, पुत्र, स्त्री, भाई इनके घरका पति पापग्रहसे युक्त होके १।८ में होवे तो इनके शरीरमें व्रण स्फोट आदिक चिह्न बताने. इसी प्रकार इन स्थानोंमें सूर्य हो तो शिरपर, चन्द्रमा हो तो मुखपर, मङ्गल हो तो कंठपर, बुध हो तो हृदयपर, बृहस्पति हो तो नाभिके समीप व्रणचिह्न बताना ॥ १७ ॥

नेत्रे पृष्ठे च शुक्रो दिनकरतनयः स्यात्पदे चाधरे चेत्केतुर्वा सैंहिकेयस्तदनु तनुपति-भौमवित्क्षेत्रसंस्थः । आभ्यामालोकितः सन् भवति हि कतिचित्स्थानगो वा तदानीं नेत्रे रोगी नरः स्यात्प्रवरमतियुतैर्होरिकै-र्ज्ञेयमेवम् ॥ १८ ॥

शुक्र हो तो नेत्रपर, शनि हो तो पीठपर, राहु हो तो पैरके ऊपर, केतु हो तो होठपर व्रणका चिह्न बताना. अब नेत्र-व्याधिके योगको कहते हैं कि, लग्नका पति मङ्गल और बुधकी राशिपर स्थित हो इनसे ही देखा जाता हो तो चाहे वह लग्न-पति किसी स्थानमें पडा हो परंतु वह नर नेत्ररोगी है ऐसा दैवज्ञजनोंने जानना ॥ १८ ॥

षष्ठेशे लग्नयाते भवति हि मनुजो वैरिहन्ता धनस्थे पुत्रात्तार्थोऽतिदुष्टः सहजभवनगे ग्रामदुःखाकरः स्यात् । नाभिस्थाने च रोगी तनुनिधनपती शत्रुभावस्थितौ ना नेत्रे वामेतरे स्यादसुरकुलगुरुः सूर्यजस्त्व-ङ्घ्रिरोगी ॥ १९ ॥

छठे घरका पति लग्नमें पडा हो तो जन्मनेवाला जन शत्रुको नष्ट करनेवाला हो और जो धनस्थानमें पडा हो तो पुत्रकरके

धन हरा जावे, वह नर अत्यन्त दुष्ट हो. तीसरे घरमें जो छठे स्थानका पति हो तो ग्रामको दुःख देनेवाला और नाभिकी जगह रोगवाला होता है. लग्न और आठवें घरका पति छठे घरमें हो तो वह नर बायें नेत्रमें रोगवाला हो और ६ । ८ वें घरमें शुक्र हो तो दहिने नेत्रमें रोग हो, शनैश्चर होवे तो पीठ-पर वा चरणपर रोग बताना ॥ १९ ॥

दन्ते दन्तच्छदे वा कुमुदपतिरिपुः संस्थितः षष्ठभावे केतुर्वा लग्ननाथः कुजबुधभवने संस्थितः क्वापि दृष्टः । स्वेन प्रत्यर्थिना वा भवति जनुषि चेदासनाधें सरोगस्तौ भूमी-सूर्यपुत्रौ यदि रिपुगृहगौ तद्भवः स्याद्गदो नुः२०

यदि राहु केतु छठे घरमें हों तो दाँतपर अथवा होठपर रोग बताना और मङ्गल तथा बुधकी राशिपर स्थित हुआ लग्नेश अपने शत्रुकरके पूर्णदृष्टिसे देखा हुआ हो तो चाहे किसी घरमें भी होवे तो भी गुदाके समीपमें रोग होवे. यदि मंगल शनि छठे घरमें हों तो वह रोग ऐसे बताना कि, मङ्गल हो तो रुधिरका विकार, शनि हो तो अन्यविकार बतावे ॥ २० ॥

प्रालेयांशौ रिपुस्थे खलखगसहिते मानवो रोगवान् स्यात् क्रूरैर्निष्पीडितश्चेत्तनुसदन-गतः शीतरश्मिस्तदानीम् । क्रूरे केन्द्रा-लयस्थे यदि शुभविहगैर्नेक्षिते रोगवान्

स्यात्तस्मिन् काव्यालयस्थे कुजगुरुकवि-
भिर्नैक्षिते तद्वदेव ॥ २१ ॥

यदि चन्द्रमा पापग्रहसे युक्त होके छठे घरमें बैठा होवे तो और शनि आदि क्रूरग्रहोंकरके दृष्ट वा योगकरके पीडित होके लग्नमें चन्द्रमा पडा तो भी रोगी हो. यदि क्रूरग्रह केन्द्रस्थानमें हो शुभग्रहोंकरके दृष्ट नहीं हो तो रोगी हो, वह क्रूरग्रह शुक्रकी राशिपर हो, मंगल शुक्र बृहस्पति इन करके देखा नहीं गया हो तो भी रोगी होवे. यहां रोगकारक ग्रहके स्वभावके अनुसार कफ वात आदिकी बीमारी कहना ॥ २१ ॥

पुंलग्ने स्वीयतुङ्गे रिपुभवनपतौ वीक्षिते
सन्नभोगैरङ्गे नूनं नराणामरिजनवशतः
स्याद्गदो गूढरूपः। रिःफस्थाने स्थिते चेद-
रिसदनपतौ सिंहिकापुत्रयुक्ते किंवा सप्ता-
श्वयुक्ते परगृहवसतिर्नीचवृत्तिर्नरः स्यात् ॥२२॥

छठे घरका पति पुरुष लग्नकी राशिपर हो वा स्वोच्चका हो पापग्रहोंकरके दृष्ट होवे तो मनुष्योंके शरीरमें शत्रुओंकरके कियाहुआ गुप्तरोग बताना. छठे घरका पति राहुसे युक्त होवे अथवा सूर्यसे युक्त होवे अथवा बारहवें घरमें स्थित होवे तब वह जन पराये घरमें रहनेवाला तथा नीच वृत्तिवाला होय २२

विवाहयोगः।

यावन्तो वा विहङ्गा मदनसदनगाश्चेन्निजा-

धीशदृष्टास्तावन्तो निर्विवाहास्त्वथ सुम-
तिमता ज्ञेयमित्थं कुटुम्बे । कार्यो होराग-
मज्ञैरधिकबलवतां खेचराणां हि योगा-
दादेश्यं तत्र वीर्यं रविविधुकुभुवामङ्कदिक्
शैलसंख्यम् ॥ २३ ॥

जितने ग्रह सातवें घरमें स्थित हों सप्तमेशकरके दृष्ट हों उतनेही विवाह पुरुषके होने चाहिये. उत्तम बुद्धिवाले दैवज्ञने इसी प्रकार कुंटुंबमें पिता भाई आदिकोंकेभी विचारने. जातकशास्त्रवेत्ता पंडितजनोंने अधिक बलवाले ग्रहोंके योगसेभी विचार करना. जैसे-षड्बलमें सूर्यके छः रूप हैं, चंद्रमाके दश हैं, मंगलके ७, अन्योंमें ६ हैं; इनमें यथाक्रमसे ये ग्रह बली होते हैं ऐसा विचार करना ॥ २३ ॥

केन्द्रस्था वा त्रिकोणे यदि खलु गृहिणी-
कारकाख्या नभोगाः कामार्थेशौ निजर्क्षे
परिणयनविधिः स्यात्तदानी न्तुरेकः । जाया-
धीशः कुटुम्बाधिपतिरपि युतश्चेत्त्रिके गर्हि-
ताख्यैर्यावद्भिः शुक्रयुक्तो नियतमिह भवेत्
तावतीनां विरामः ॥ २४ ॥

स्त्रीकारक (शुक्र, चंद्र, गुरु, बुध) ग्रह केंद्रमें स्थित हों अथवा ८।९घरमें स्थित होवें और सातवें दूसरे घरका पति

अपने घरोंमें होय तो एकही विवाह होना कहे. सप्तम भावका पति अथवा दूसरे घरका पति शुक्रसे युक्त होके जितने क्रूर ग्रहोंकरके दृष्ट हुआ त्रिक (६।८।१२)घरमें पडा हो उतनीही स्त्रियोंकी मृत्यु होय ॥ २४ ॥

गर्भभावयोगः ।

लग्नस्थे सप्तसप्तौ दिनमणितनये कामगे चार्कमन्दौ द्यूने चन्द्रे नभःस्थे न च यदि गुरुणाऽऽलोकिते नो प्रसूते । द्वेष्येशे मित्रमन्दौ द्विषि सितकिरणेऽस्ते बुधेनेक्षिते नो सूते द्वेष्ये जलर्क्षे यदि कुजरविजौ गर्भिणी स्यान्न नारी ॥ २५ ॥

सूर्य लग्नमें हो, शनि सातवें घरमें हो यह १ योग, सूर्य शनि सातवें हों, बृहस्पतिकी दृष्टिसे रहित हुआ चंद्रमा दशवां होय यह दूसरा योग इन दोनों योगोंके होनेसे तिस पुरुषकी स्त्री संतान नहीं जने. छठे घरका पति तथा सूर्य शनि छठे घरमें हों बुधकरके दृष्ट हों और चंद्रमा सातवें घरमें हो तो स्त्री संतान नहीं जनेगी. जो मंगल शनि छठे घरमें हों अथवा चौथे घरमें हों तो स्त्री गर्भवती नहीं हो. ऐसे ये चार वंध्यायोग हैं (पुरुषके ग्रहोंसे सब फल जानना) ॥ २५ ॥

अष्टमभावयोगः ।

रन्ध्रस्थानस्थिता वा स्थिरभवनगताः शुक्रवागीशसौम्याः कृच्छ्राणां कर्मणां ना

भवति हि नियतं कारकः स्तब्धभावः ।
बाल्ये दुःखी नरः स्यान्निधनगृहपतौ लाभ-
याते सुखी स्यात्पश्चात् पापेऽल्पमायुः
शुभखगसहिते दीर्घमायुर्नराणाम् ॥ २६ ॥

शुक्र, बृहस्पति, बुध ये आठवें घरमें हों अथवा स्थिरराशि-पर होवें तो निरंतर कष्ट (कठोर) कर्म करनेवाला और कठिन चित्तवाला होवे. अष्टमभावका पति ११ घरमें हो तो बाल्य अवस्थामें दुःखी रहे पीछे सुखी होवे. ८ घरका पति पापग्रह हो ११घरमें बैठा हो तो अल्प आयु कहे यदि वह शुभग्रहसे युक्त होके बैठा हो तो दीर्घ आयु बताना ॥ २६ ॥

कुर्यादायुर्गृहेशः खलखगयुगरिप्रान्त्यसंस्थो-
ऽल्पमायुश्चेल्लग्नाधीशयुक्तो निधनभवनपः
स्वल्पमायुः प्रदत्ते । रन्ध्रस्थो वा चिरायु-
स्तदनु रविभवस्तत्र तद्वल्लयेशः क्लेशस्थान-
स्थितश्चेज्जनुषि हि मनुजो वैरियुक् तस्करः
स्यात् ॥ २७ ॥

आठवें घरका पति क्रूरग्रहसे युक्त होके छठे और बारहवें घरमें हो तो अल्प आयु बताना. यदि ८ घरका पति लग्नेश-करके युक्त होके ६।१२ वें घरमें हो तो स्वल्प आयु करता है. आठवें घरका पति आठवें घरमेंही हो अथवा ८वें घरमें शनि हो

तो दीर्घ आयु होवे. यदि अष्टम घरका पति धनस्थानमें जन्म-समयमें पडा हो तो वह मनुष्य चोर हो और शत्रुकरके युक्त रहे २७

आयुर्देहाधिनाथौ निधनरिपुगतौ हीनवीर्यौ
प्रसूतौ सङ्ग्रामे कीर्तिशेषं व्रजति बलयुतौ
तौ सदा तज्जयाप्तिम् । शुक्रेणान्दोलिकाया-
स्तनुपविधुयुतो वाहनस्थाननाथो मूर्तौ दंता-
वलेन्द्रैरथ गुरुसहितः स्याज्जयो वाजिवाहैः॥२८

जिसके जन्मसमय हीनबलवालेहुए लग्नेश और अष्टमघरका पति ६।८वें घरमें हो तो वह नर युद्धमें उलटा होके मृत्युको प्राप्त होता है. वेही ८।१के पति बली होवें तो युद्धमें विजय पानेवाला हो, चौथे घरका पति शुक्रसे युक्त होवे तो पीनसमें बैठा हुआ विजय पावे. चौथे घरका पति लग्नेश और चंद्रमाकरके युक्त हो लग्नमें स्थित होवे तो महाहस्तियोंकरके विजय पावे अथवा चौथे घरका पति बृहस्पतिसे युक्त होके लग्नमें पडा हो तो घोडे और हस्तियोंकरके विजय पावे ॥ २८ ॥

नवमभावयोगः ।

भाग्येशो मूर्तिवर्ती सुरपतिगुरुणालोकितो
पवन्द्यो लग्नस्थो वाहनेशो नवमपतिरुभौ
पश्यतश्चेत्स्वगेहम् । सर्वासामास्पदं स्यान्म-
नुज इह तदा सम्पदां वाहनेन्द्रो रन्ध्रस्थान-

स्थितश्चेद्व्रजति हि मनुजो भाग्यराहित्य-
मेवम् ॥ २९ ॥

नववें घरका स्वामी बृहस्पतिसे दृष्ट होके लग्नमें पडा हो तो जन्मनेवाला जन राजाओंसे मान्य हो, नववें घरका पति लग्नमें बैठा हो और चौथे घरका पति तथा नववें घरका पति दोनों अपने २ घरको पूर्णदृष्टिकरके देखते हों तो वह मनुष्य संपूर्ण संपत्तियोंका आश्रय हो अर्थात् सर्वसंपत्तिमान् हो. चौथे घरका पति आठवें घरमें बैठा होय तो वह मनुष्य भाग्यहीन होता है ॥ २९ ॥

हीनानां वाहनानां तदनु चपलताप्राप्तिरेवं
नराणां ज्ञेया होरागमज्ञैरथ नवमपतौ लाभगे
राजवन्द्यः । दीर्घायुर्धर्मशीलस्तदनु धनवपु-
र्वाहनेशः स्वगेहे धर्मेशो लग्नवर्ती जनुषि
यदि गजस्वामिसिंहासनानाम् ॥ ३० ॥

इस श्लोकमें कहीहुई भाग्यहीनताका लक्षण यह है कि, अवस्था-बल आदिसे रहितहुए वाहनोंकी प्राप्ति हो फिर चपलता हो अर्थात् स्थिरभी नहीं रहे ऐसे होराशास्त्रके जाननेवालोंको बताना चाहिये.नववें घरका पति ११ घरमें पडा हो तो राजासे मान्य दीर्घ आयुवाला तथा धर्म स्वभाववाला होवे. जन्मसमयमें धन २ लग्न १ चतुर्थ ४ इन घरोंके पति अपने २ घरोंमें स्थित होवे तो और ८ घरका पति लग्नमें पडा हो तो हस्ती राजसिंहासन आदिकोंकी प्राप्ति होय ॥ ३० ॥

योगानां स्यादमीषां प्रचुरबलयुतो योऽधिप-
स्तद्दशायां लब्धिश्चान्तर्दशायामथ गुरु-
भृगुजौ वाहनाधीशयुक्तौ । केन्द्रे याने
त्रिकोणे त्वथ गुरुकवियुग्वाहनस्थानगो
वा भाग्याधीशः स्वराशौ भवति नरपति-
र्वाहनव्यूहनाथः ॥ ३१ ॥

इन कहेहुए तथा आगे वक्ष्यमाण योगोंको करनेवाला जो ग्रह अधिक बलवान् हो तिसकी दशा अंतर्दशामें वह फल होगा ऐसा जानना. बृहस्पति शुक्र चौथे घरके स्वामीसे युक्त होके केन्द्रमें अथवा ११ में होवे अथवा ८।९ घरमें होवे अथवा बृहस्पति शुक्रसंयुक्त हुआ ९ घरका पति चौथे घरमें वा अपने घरमें हो तो वाहनोंके समूहका पति राजा हो ॥ ३१ ॥

कर्मस्थे क्षेत्रचिन्ता त्रिकभवनगते सौख्य-
चिन्ता महीजे वागीशे यानभूषावसनहय-
भवा चामरच्छत्रचिन्ता । प्रालेयांशौ सिते
स्यादथ मदनगते वाक्पतौ पुत्रचिन्ता
संतानस्थानयाते हिमकरतनये बुद्धिजाऽथ
त्रिकोणे ॥ ३२ ॥ मार्तण्डे तातबंधोरथ
सुतनवमद्यूनगे दानवेज्ये यात्राचिन्ता नरा-
णामथ नवमसुते पुत्रजा वासवेज्ये । कर्मा-

धीशो विवीर्यो यदि जनुषि तदा सर्वकर्मा-
स्पदं नो गेहे स्वीये यदाऽसौ शुभविहग-
युतो मानवो मानशीलः ॥ ३३ ॥

दशवें घरमें मंगल हो तो खेतकी चिंता रहे. त्रिक (६ । ८ । १२) घरमें मंगल हो तो सब बातोंके सुखकी चिंता बनी रहे और ६ । ८ । १२ घरमें बृहस्पति हो तो वाहन, आभूषण, वस्त्र, घोडा इनकी चिंता बनी रहे. चन्द्रमा अथवा शुक्र ६ । ८ । १२ घरमें हो तो चँवर छत्र इनकी चिंता बनी रहे. बृहस्पति सातवें घरमें हो तो पुत्रकी चिंता बनी रहे. ९ । ५ घरमें सूर्य हो तो पिता भाईकी चिंता बनी रहे और ९ । ९ । ७ इन घरोंमें शुक्र हो तो यात्राकी चिंता बनी रहे. यदि नववें पांचवें घरमें (अपनी राशिका होके) बृहस्पति पडा हो तो मनुष्योंके पुत्रकी चिंता रहे. यदि जन्मसमयमें दशव घरका पति निर्बल होय तो सब कामोंको सिद्ध करनेवाला न होवे अर्थात् जन्मकालमें १० घरका पति बली हो तो वह सब कामोंको सिद्ध करनेवालाही हो. यदि १० घरका पति शुभसे युक्त होके १० घरमें पडे तो वह मनुष्य मानवाला हो ३२॥३३

लाभे केन्द्रे त्रिकोणे तनुनिधनभवस्थानगाः
संस्थिताश्चेद्दीर्घायुः पापखेटाः पणफरहिबु-
कत्रिस्थिता मध्यमायुः। हीनायुः प्रोक्तमेते
यदि जनुषि नृणां स्युस्तदाऽऽपोक्लिमस्था

रन्ध्रस्थानस्थितानां तनुपतिगगनस्वामि-
सूर्यात्मजानाम् ॥३४॥ यो हीनस्तद्दशायु-
स्त्वथ निजभवने धर्मकर्मात्मजेशाश्चेत्स्यु-
स्तेषां दशायां बहुलबलवशाद्धर्मबुद्धि-
र्नराणाम् । हानिः स्यादन्यथाऽरौ तनु-
निधनपती भानुपुत्रेण युक्तौ स्यातां स्वभा-
नुना चेत्तदनु च शिखिना तद्दशायां
व्रणाः स्युः ॥ ३५ ॥

मनुष्योंके जन्मसमयमें लग्न, अष्टम, दशम इन घरोंके पति ११ और केंद्रमें और ९ । ५ घरमें होवें तो दीर्घआयुवाला हो और जो पापग्रह पणफर २ । ८ । ११ इन घरोंमें वा ३ । ४ घरमें हो तो मध्यम आयु होवे और ये पूर्वोक्त ग्रह ३ । ६ । ९ । १२ इन घरोंमें होवे तो अल्पआयु होय, वहां ३२ वर्षसे नीचे अल्प आयु, पीछे मध्यम आयु, ६४ वर्षसे अधिक दीर्घ आयु होती है. आठवें घरमें स्थित लग्नेश दशम घरका पति शनि इनमें जो ग्रह हीन बलवाला हो उसकी दशापर्यंत आयु होवे और ९ । १० । ५ इन घरोंके पति अपने २ घरोंमें अर्थात् इन्हीं घरोंमें होवें तो इनमें जो अधिक बलवाला होवे उसकी दशामें मनुष्योंकी धर्ममें बुद्धि होती है. अन्यथा कहिये अन्य घरोंमें पडे हों तो अधिक बलवालेकी दशामें धर्मकी हानि हो, लग्न और ८ घरका पति ये दोनों ग्रह शनि राहु केतु इनमेंसे एक

किसीसे युक्त होवे और छठे घरमें बैठे हों तो इन १ । ८ घरके पति ग्रहमें जो अधिकबलवान् हो उसीकी दशामें व्रण (घाव आदि) होते हैं ॥ ३४ ॥ ३५ ॥

यानेशस्तत्र संस्थो यदि भवति तदा यानहेतुर्मृतिः स्याच्चोराच्छत्रेण चिन्ता नवमभवनतो भाग्यजाता विधेया । व्योम्नो भूपालभूषावसनहयमहाकर्मणां प्राप्तिचिन्ता लाभस्थानेऽखिलानां व्ययनिधनगृहात् कल्मषाणां विधेया ॥ ३६ ॥

यदि चौथे घरका पति छठे घरमें हो तो सवारी (वाहन) हेतुसे, चौरसे वा शत्रुसे मृत्यु हो. (शनिके योगसे वाहनसे, राहुके योगसे चौरसे, केतुके योगसे शस्त्रकरके मृत्यु बतानी) और नवम घरमें भाग्यकी चिंता (शुभाशुभ फल) विचारना और दशवें घरसे राज्यसंबंधका काम, आभूषण, वस्त्र, घोड़ा इत्यादिक बड़े कामोंका फल विचारना. ग्यारहवें घरसे संपूर्ण लाभों (प्राप्तियों) की चिंता विचारनी. बारहवें घरमें मलिन कामोंकी चिंता विचारनी. (शुभाशुभ ग्रहोंकी दृष्टि और इन स्थानोंके स्वामियोंके विचारसे शुभाशुभ फल कहे. टीकामें विस्तारपूर्वक अन्य ग्रंथोंका मत लिखा है) ॥ ३६ ॥

लग्नस्थे रिःफनाथे भवति सुवचनो मानवो रूपवान्वा स्वर्क्षे कार्पण्यबुद्धिर्बहुतरपशु-

मान् ग्रामयुक्तः सदा स्यात् । धर्मे तीर्था-
वलोकी बहुलवृषमतिः क्रूरयुक्ते च पापी
मिथ्याकोशान्तकृत् स्यान्नियतमिदमिति
ज्ञेयमेवं सुधीभिः ॥ ३७ ॥

बारहवें घरका पति लग्नमें बैठा हो तो वह मनुष्य सुन्दर-
वाणीवाला तथा सुन्दररूपवान् हो. यदि अपने घरमें हो तो
कृपणबुद्धिवाला, अनेक पशुओंवाला तथा सदा ग्रामका अधि-
कारी हो. यदि ८ घरमें हो तो तीर्थयात्रावान् तथा बहुतधर्ममें
अत्यंत बुद्धि रक्खे. पापग्रहसे युक्त होके पडा हो तो पापी हो,
संचितद्रव्यका नाश करे. इस प्रकारके योगसे ये फल पंडित
जनोंने नियमकरके जानने ॥ ३७ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलङ्काराख्ये
जातके मञ्जुलेऽस्मिन् । भावाध्यायः
श्रीगणेशेन वर्यैर्वृत्तैर्युक्तः शैलरामैः प्रणीतः ३८

इति श्रीजातकालङ्कारे द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

मनोहर छंदों करके रचेहुए पंडितजनोंको संतुष्ट करनेवाले
अतिसुंदर इस जातकालंकारविषे श्रीगणेशकविने सैंतीस श्लोकोंसे
भावाध्याय रचके समाप्त किया है ॥ ३८ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥

योगाध्यायः ३.

ग्रहाधीना योगाः सदसदभिधाना जनिमतां
ततो योगाधीनं फलमिति पुराणैः समुदि-
तम् । अतो वक्ष्ये योगान् सकलगणका-
नन्दजनकान् शुकास्याद्‌द्भूतं मतमहमिहा-
लोक्य रुचिरम् ॥ १ ॥

प्राचीन ऋषियोंसे कहा हुआ फल योगोंके अधीन कहा है और वे योग ग्रहोंके अधीन हैं तथा जन्मनेवालोंके शुभाशुभ फलको कहनेवाले हैं; इसलिये श्रीशुकदेवजीके मुखसे निकले-हुए सुंदर मतको अच्छी तरह देखके यहां संपूर्ण ज्योतिषियोंके आनंददायक योगोंको कहूंगा ॥ १ ॥

ऋक्षेशः क्षीणवीर्यः सुतनवमगतो मानवो
मन्युमान्वै राशीशे साङ्गनाथे रिपुनिधनगृहे
प्रान्त्यगे दुर्बलः स्यात् । धर्मद्वेष्याष्टनाथाः
खलखचरयुताः स्थानके क्वापि संस्थास्तै-
र्दृष्टाः स्यात्तदानीं परपुरुषरता सुन्दरी
तस्य पुंसः ॥ २ ॥

जन्मराशिका पति क्षीणबलवाला हो ५।९ स्थानमें पडा हो तो जन्मनेवाला नर क्रोधी हो और जन्मराशिका पति लग्नपतिके संग होके ६।८।१२ इन घरोंमें बैठा हो तो वह नर दुर्बल हो,

९।६।८ इन घरोंके पति क्रूरग्रहोंसे युक्त हो अथवा क्रूरग्रहोंकी दृष्टिसे युक्त होके किसी स्थानमें पडे हों तो उसकी स्त्री जारिणी (व्यभिचारिणी) होती है ॥ २ ॥

मातृस्थाने स्थितौ चेत्कुजविधुसहितौ षष्ठ-
रन्ध्राधिनाथौ स्यातां यस्य प्रसूतौ भवति
खलु नरस्त्वन्यजातस्तदानीम् । क्वापि
स्थाने स्थितौ स्तः कलुषखगयुतौ भाग्य-
षष्ठाधिनाथौ चेदेवं राहुणा वा तदनु च
शिखिना संयुतावन्यजातः ॥ ३ ॥

जिसके जन्मसमय छठे आठवें घरके पति मंगल और चंद्रमासे युक्त होके चौथे घरमें स्थित हो तो वह नर अन्य-पुरुष (जारपुरुष) से उत्पन्नहुआ जानना. ८।६ घरके पति पापग्रहोंकरके युक्त तथा राहु-केतुसे युक्त होके किसी स्थानमें स्थित हो तो भी वह नर पितृव्यतिरिक्त अन्य पुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना ॥ ३ ॥

युक्तौ मन्देन शूद्रादथ भवति विदा वैश्यतो
भास्करेण क्षत्राज्जातः सितेन त्रिदशप-
गुरुणा भूमिदेवात् प्रसूतः । दैत्येशेज्यौ
सपापौ मदनरिपुधनस्थानगौ चेत्परस्त्री-

१–‘ भाग्यरन्ध्राधिनाथौ ’ इति पाठान्तरम् ।

गामी व्योमारिपौ स्तो गगनभवनगो तत्पि-
ताऽन्यारतः स्यात् ॥ ४ ॥

वह ८।६ घरके पति शनिकरके युक्त हो तो शूद्रकरके उत्पन्न, बुधसे युक्त हो तो वैश्यसे उत्पन्न, सूर्यसे युक्त हो तो क्षत्रिय-करके उत्पन्न और शुक्रकरके युक्त हो तो तथा बृहस्पतिसे युक्त हो तो ब्राह्मणसे उत्पन्न हुआ जानना । इन शुभग्रहोंका योग पापग्रहोंके साथ होनेसे अथवा ये नीचके हों और शुक्र, बृहस्पति पापग्रहोंकरके युक्त होके ७।६।२ इन घरोंमें पडें हों तो जन्मनेवाला जन परस्त्रीगामी (जार) होवे. दशवें और छठे घरके पति १० घरमें स्थित हों तो उसका पिता अन्य स्त्रीके संग रमण करनेवाला जानना ॥ ४ ॥

मूर्तीशः पापयुक्तो धनसदनगतश्चेत्तदा
सज्जनस्त्रीसंयुक्तस्तत्पिता स्यात्खलविहग-
युताः कामशत्रुस्वनाथाः । कोशस्थास्त-
द्वदेवं फलमिति विविधं भ्रातृपत्न्योश्च पित्रोः
स्थानेशाः क्वापि भावे तनुपतिसहिताश्चेत्
पुमानन्यजातः ॥ ५ ॥

लग्नका पति पापग्रहसे युक्त होके दूसरे घरमें स्थित हो तो उसका पिता उत्तमजनकी स्त्रीके संग रमण करता है. ७।६।२ इन घरोंके पति पापग्रहोंसे युक्त होके दूसरे घरमें स्थित

---

१ 'बलविहग' इति पाठान्तरम् ।

हो तो भी यह फल जानना. इस प्रकारसे अनेक प्रकार (दुरा-
चार) के फल जानने. ३ । ७ । ४ । १० । इन घरोंके पति
लग्नपतिके संग होके किसी घरमें पडें हों तो वह जन अन्य
पुरुषसे उत्पन्न हुआ जानना ॥ ५ ॥

लग्नाधीशेन्दुपुत्रौ क्षितितनयनिशानायकौ
कापि संस्थौ युक्तौ स्वर्भानुना वा भवति
हि मनुजः केतुना श्वेतकुष्ठी । आदित्यो
भौमयुक्तस्तदनु शनियुतो रक्तकृष्णाख्य-
कुष्ठी सार्कौ लग्नाधिनाथो व्ययरिपुनिधन-
स्थानगस्तापगण्डः ॥ ६ ॥

लग्नका पति और बुध अथवा मंगल, चन्द्रमा, राहुकरके
अथवा केतुकरके युक्त होके किसी स्थानमें पडें हों तो जन्मने-
वाला नर श्वेतकुष्ठी हो. मंगल शनिकरके युक्त सूर्य कहीं स्थित
हो तो रक्तकुष्ठी वा कृष्णवर्णका कुष्ठवाला हो. सूर्यसहित लग्नका
पति १२ । ६ । ८ वें घरमें स्थित हो तो ताप और गंडमाला
रोगसे युक्त जानना ॥ ६ ॥

ज्ञेयश्चन्द्रेण गण्डो जलज इह युतो ग्रन्थि-
शस्त्रव्रणः स्याद्भूमीपुत्रेण पित्तं हिमकर-
तनयेनाथ जीवेन रोगः । आमोद्भूतस्ततश्चे-
द्भृगुतनययुतो नुः क्षयाख्यो गदः स्या-

श्चोरोद्भूतोऽन्त्यजाद्वा यमशिखितमसामेक-
युक्तू तन्वधीशः ॥ ७ ॥

चंद्रसे युक्त लग्नपति त्रिक (६ । ८ । १२) घरमें स्थित हो तो जलसे उत्पन्न हुआ गंड (नाश) हो. मङ्गलसहित लग्नेश ६।८।१२ घरमें स्थित हो तो ग्रन्थि शस्त्र आदिकका घाव हो. बुधसे युक्त हुआ लग्नेश ६ । ८ । १२ में हो तो पित्तरोग हो. बृहस्पतिसे युक्त होके स्थित हो तो आमरोग हो. शुक्र-करके युक्त हो तो मनुष्यके क्षयरोग होता है. शनि, राहु, केतु इनमेंसे एक किसीसे युक्त होके लग्नेश ६ । ८ । १२ घरमें पडे तो चोरसे अथवा नीचजातिसे उत्पन्न हुआ रोग जानना ॥७॥

चन्द्रो मेषे वृषे वा कुजशनिसहितः श्वेत-
कुष्ठी सरोगो दैत्येज्यारेन्दुमन्दास्तिमिभव-
नगताः कर्कटालिस्थिता वा । अङ्गे सौख्येन
हीनः परमकलुषकृद्रक्तकुष्ठी नरः स्याद्
वागीशो भार्गवो वा यदि रिपुगृहपो मूर्तिगः
क्रूरखेटैः ॥ ८ ॥ दृष्टश्चेद्रक्तशोफी त्वथ
खलसहिता मीनकर्कालिभावा लूताकार-
श्चिरं स्यात्परमगदकरः कुष्ठ एवं नराणाम् ।
रिःफस्थानस्थितश्चेद्विबुधपतिगुरुर्गुह्यरोगी
नितान्तं भूमीमार्तण्डपुत्रौ व्ययभवनगतौ
शत्रुगौ वा व्रणी स्यात् ॥ ९ ॥

मंगल शनिसे युक्त चंद्रमा मेष वा वृष राशिपर स्थित हो तो वह श्वेतकुष्ठी रोगी हो और शुक्र, मंगल, शनि ये मीन-राशिके अथवा कर्कराशिपर वा वृश्चिकराशिपर स्थित हो तो उसको शरीरका सुख नहीं हो, महापातकी और रक्तकुष्ठी हो. यदि बृहस्पति अथवा शुक्र वा छठे घरका पति क्रूर ग्रहोंकरके दृष्ट हो और लग्नमें स्थित हो तो मुखपर सोजा (रसोली आदि) हो. मीन, कर्क, वृश्चिक इन राशियोंवाले भाव (कोई भी घर) क्रूर ग्रहोंसे संयुक्त हो तो लूताकार (मकडीके जालेसदृश) महान् क्लेशकारक कुष्ठरोग होवे. बृहस्पति बारहवें स्थानमें स्थित हो तो गुदाका रोगवाला अथवा गुप्तरोग जो कि, वैद्यकी समझमें न आवे ऐसा रोग निरंतर रहे. मंगल सूर्य १२।६ घरमें हों तो व्रण (घाव) स्फोटकचिह्नसे युक्त हो ॥ ८ ॥ ९ ॥

मेषे मीने कुलीरे तदनु च मकरे वृश्चिके मन्दचन्द्रौ स्यातां क्रूरान्वितौ चेन्नवमभव-नगौ मानवः स्याच्च खञ्जः । लग्नेस्थं[1] पश्य-तीन्दुं दिनमणितनयं भूमिजो द्यूनदृष्टया बुद्धया हीनो नरः स्यादिनविधुविवरे भूमि-जश्चेत्तथैव ॥ १० ॥

क्रूरग्रहसे युक्तहुए शनि-चंद्रमा मेष, मीन, वृश्चिक, मकर इन राशियोंपर स्थित हों और नववें घरमें पडे हों तो जन्मने-

१–'लग्नस्थः' इति पाठान्तरम् ।

वाला जन लंगड़ा, लूला हो. लग्नमें स्थित हुए चंद्रमाको अथवा शनिको सप्तम दृष्टिकरके मंगल देखता हो तो वह नर बुद्धिहीन हो सूर्य चंद्रमाके १०में मंगल पडा हो तो भी बुद्धिहीन बताना॥

प्रालेयांशौ तनुस्थे गगनसदनगे साधिकारे-
ऽर्कसूनौ दृष्टेऽस्मिन्कामदृष्ट्या हिमकिरण-
भुवा बुद्धियुङ् मानवः स्यात् । पृथ्वी-
सूनुं मृगाङ्कं तनुनिलयगतं पूर्णदृष्ट्येन्दु-
सूनुः पश्येच्चेद्बुद्धिहीनस्त्वथ शशितनुपौ
भूभुवा पीडितौ वा ॥ ११ ॥

चंद्रमा लग्नमें स्थित हो, साधिकार अर्थात् अपना घर, होरा, द्रेष्काण, नवांशक आदि आधिपत्यसहित हुआ शनि दशवें घरमें हो और पूर्णदृष्टिकरके बुधसे दृष्ट हो तो वह मनुष्य बुद्धिमान् होताहै. यदि लग्नमें स्थितहुए मंगलको और चन्द्रमाको पूर्ण दृष्टिकरके बुध देखता हो तो वह नर बुद्धिसे हीन हो अथवा चन्द्रमा और लग्नका स्वामी ये दोनों मंगलसे पूर्णदृष्टि करके पीडित होवें तो बुद्धिहीन हो ॥ ११ ॥

लग्नस्थे रौहिणेये तदनु रविशनी क्रूरदृष्टौ
रिपुस्थावेकर्क्षे चैकभागे भवति गतमति-
र्दृष्टिहीनौ शुभानाम् । तिग्मांशौ वैरिनाथे
खलविहगयुते तुर्यगे सूर्यसूनौ हृद्रोगी

वाक्पतौ वा भवति हृदि नरः कृष्णपित्ती सकम्पः ॥ १२ ॥

बुध लग्नमें स्थित हो और पापग्रहोंसे दृष्ट तथा शुभ ग्रहोंकी दृष्टिसे रहितहुए सूर्य शनि एक राशिपर स्थित हों अथवा एक नवांशकपर स्थित हों और संग हुए ही छठे घरमें पड़े हों तो वह नर बुद्धिहीन हो. छठे घरका पति सूर्य पापग्रहसे युक्त होके चौथे घरमें बैठा हो तो हृद्रोगवाला हो. शनि अथवा बृहस्पति छठे घरके पति हों और पापग्रहोंसे युक्त होके चौथे घरमें बैठे हों तो हृदयमें कृष्णपित्त रोगवाला अथवा दुष्टजनों करके पीडित हुआ हृदयमें कंपरोगवाला होता है ॥ १२ ॥

दुष्टैर्वा पीडितः सन्नथ कुजरविजौ वाक्पतिर्बन्धुसंस्थो हृद्रोगः स्यान्नराणां व्रण इह नियतं क्लेशकारी शरीरे । पातालस्थो महीजस्तनयनिलयगाः सूर्यवित्सैंहिकेया रन्ध्रस्थो भानुपुत्रो यदि जनुषि तदा स्यान्नरो दुःखभागी ॥ १३ ॥

यदि मंगल, शनि, बृहस्पति ये चौथे घरमें स्थित हों तो मनुष्योंके इस योग होनेमें हृदयके रोगके हेतुसे शरीरमें क्लेशकारी व्रण (घाव) होता है. मंगल सातवें घरमें स्थित हो और सूर्य, बुध, राहु ये पांचवें घरमें स्थित हों, शनि आठवें घरमें हो तो जन्मनेवाला नर दुःखभोगता है ॥ १३ ॥

लग्नं पश्येन्निजर्क्षे यदि धरणिसुतः संस्थितः कातरः स्याच्छायासूनुर्नभःस्थो यदि निशि जननं तद्वदत्रापि वाच्यम् । मूर्तौ भूमीतनूजे स्वजनकलहकृद् द्यूनगे स्वाधिकाराद्धीने भौमे वपुष्मान् परमयुधि रतस्तीक्ष्णभावश्च नूनम् ॥ १४ ॥

अपने क्षेत्रमें बैठाहुआ मंगल यदि लग्नको देखता हो तो जन्मनेवाला नर डरपोक (भीरु) होता है. यदि शनि दशवें घरमें हो और रात्रिमें जन्महुआ हो तो भी वह नर डरपोक होता है. लग्नमें मंगल हो तो मित्र स्वजनोंके साथ कलह करनेवाला हो और अपना घर, होरा, द्रेष्काण, नवांश आदिसे रहित होके सातवें घरमें बैठा हो तो दृढशरीरवाला, युद्धमें अत्यन्त प्रीति रखनेवाला और तेजस्वभाववाला निश्चयकरके होता है १४

पश्येतां कामदृष्ट्या धरणिविधुसुतौ चेन्मिथः स्यात्तदानीमुच्चाकारोऽथ चन्द्रं शनिरविमहिजाश्चेत्प्रपश्यन्ति शीतः । क्षीणे प्रालेयभानौ धरणिजसहिते पापभूमी खरः स्यान्मूर्तिस्थो द्यूनदृष्ट्या हिमकरतनयो वासवेज्यं प्रपश्येत् ॥ १५ ॥ हास्यासक्तः सभौमे हिमकरतनये स्याच्छुभर्क्षे कुजज्ञौ मन्दर्क्षे

वाऽर्कदृष्टौ नरपतिविदुषां रञ्जने कोविदः
स्यात् । पश्येत्काव्यं सितांशुर्व्ययविलय-
रिपुस्थानगो विस्मयालुः क्षिप्रं वाक्स्फूर्ति-
मान् स्यात् कुजबुधशशिनो वीर्यवत्खेटदृष्टाः ॥

मंगल, बुध ये आपसमें सातवें भवनके दृष्टिकरके परस्पर देखते हों तो जन्मनेवाला जन उच्च (ऊंचे) शरीरवाला हो. शनि, सूर्य, मंगल पूर्णदृष्टिकरके चन्द्रमाको देखते हों तो जन्मनेवाला जन शीतल स्वभाववाला हो. यदि क्षीणचन्द्रमा मंगलसहित होके पडा हो तो पाप करनेवाला और तेजस्वभाव-वाला हो. यदि लग्नमें स्थितहुआ बुध सातवें घरमें स्थितहुए बृहस्पतिको देखता हो तो जन्मनेवाला जन हास्य (ठट्ठा) करनेमें आसक्त रहे. यदि मंगलसहित हुआ बुध शुभग्रहकी राशिपर स्थित हो अथवा मंगल, बुध ये दोनों शनिकी राशि-पर स्थित हों और सूर्यकरके देखेगये हों तो राजाओं और पंडितोंको प्रसन्न करनेमें चतुर (निपुण) होता है. ६।८।१२ इन घरोंमें स्थितहुआ चन्द्रमा शुक्रको देखता हो तो विस्मय (आश्चर्य) युक्त होता है. यदि मंगल, बुध, चन्द्रमा ये बलिष्ठ ग्रहोंकरके देखे गये हों तो जन्मनेवाला जन शीघ्रतासे वचन बोलनेकी स्फूर्तिवाला होवे ॥ १९ ॥ १६ ॥

शुक्रज्ञौ द्यूनयातौ गगनविलयगौ मानवः
पुंश्चलः स्यात् कामाज्ञामन्दिरस्थौ कवि-
धरणिसुतौ तद्वदाज्ञाम्बुयातौ । काव्यारौ

तद्वदिन्दोर्नभसि रविसुतादास्फुजिन्नीर-
यायी तद्वत्कामास्पदस्था बुधसितशनयः
स्वर्क्षगे भार्गवे हि ॥ १७ ॥

शुक्र, बुध ये ७ । ८ । १० इन घरोंमें बैठे होवें तो वह नर व्यभिचारी (जार) होता है. मंगल सातवें दशवें घरमें हो अथवा ४ । १० इन घरोंमें हो तो व्यभिचारी (जार) पुरुष होता है. यदि चंद्रमासे दशवें शुक्र हो, शनिसे चौथे घरमें शुक्र हो तो जन्मनेवाला जन जार (परस्त्रीगामी) हो. बुध, शुक्र, शनि ये सातवें दशवें घरमें स्थित हों और शुक्र, अपनी राशिपर स्थित हो तो भी तद्वत् अर्थात् परस्त्रीगामी (जार) होता है ॥ १७ ॥

प्रालेयांशोः सिताद्वा दिनमणितनयस्त-
त्पुरोभागवर्ती मूर्तौ चेच्चन्द्रशुक्रौ यदि
तरणिसुतं पश्यतश्चायशाः स्यात् । शेफ-
च्छेदो नराणामथ तपनसुते भूमिकेन्द्रेऽर्क-
शुक्रे दृष्टे काव्योडुपाभ्यां यदि दिवसपते-
श्चोपरागोऽत्र तद्वत् ॥ १८ ॥

चन्द्रमासे अथवा शुक्रसे अगली राशिपर (अगले भावमें) शनि स्थित हो और चन्द्रमा, शुक्र ये दोनों लग्नमें स्थित होके शनिको देखते हों तो जन्मनेवाला नर अपयशवाला (कीर्ति-रहित) होता है. यदि शनि लग्नमें स्थित हो और शुक्र चन्द्रमा-

करके दृष्ट होवे तथा सूर्यका ग्रहण होता हो तो जन्मने-वाला जन लिंगच्छेदयुक्त (सुजाक आदि रोगवाला) होता है और तद्वत् कहिये पूर्वोक्तकी तरह अर्थात् अपयशवाला भी होता है ॥ १८ ॥

याते वक्रग्रहर्क्षे जनुषि भृगुसुते मानवस्तोष-
दायी सीमन्तिन्या रतः स्यान्न खलु मद-
नगं भार्गवं लग्ननाथः । पश्येत्स्वीयालयस्थो
यदि रहसि तदा कामिनीतोषदाता न स्यादेवं
हिमांशुर्दिनकरसुतयुग् भौमतः खे सुखे वा १९

यदि शुक्र क्रूरग्रहकी राशिपर स्थित हो तो जन्मनेवाला जन स्त्रीको संभोग (रमण) के हेतुसे सुखदायी नहीं होता है और लग्नमें बैठाहुआ लग्नका पति (पूर्ण दृष्टिकरके) घरमें स्थितहुए शुक्रको देखता हो तो संभोगसमयमें स्त्रीको सुख-दायी न हो ऐसा नहीं अर्थात् रमणसमयमें सुखदाई होता है. यदि शनिसे युक्तहुआ चन्द्रमा मंगलसे चौथे अथवा दशवें घरमें बैठा हो तो ऐसे ही उक्त प्रकारसे स्त्रीको सुख देनेवाला होता है ॥ १९ ॥

क्षोणीपुत्रेण युक्तः प्रथमसुरगुरुर्लग्नतः षष्ठ-
पोऽयं कामाधिक्यं नराणां जनयति नियतं
पापदृष्टो विशेषात् । काव्ये स्वीयालयस्थे
तदनु मिथुनगे कामवान् मानवः स्यान्मूर्तौ

सप्ताश्वसूनौ धनुषि च वृषभे चेत्पुमानल्प-
कामः ॥ २० ॥

मंगलसे युक्तहुआ शुक्र लग्नसे छठे घरका पति हो तो मनुष्योंको कामदेवकी प्रबलता करता है. यदि वह शुक्र पाप ग्रहसे देखा गया हो तो विशेषकरके निरंतर कामदेवकी प्रबलता करता है. यदि शुक्र अपनी राशिपर स्थित हो अथवा मिथुनराशिपर स्थित हो तो मनुष्य कामदेवसे युक्त होता है. यदि लग्नमें शनि हो धनराशिका अथवा मकरराशिका होवे तो मनुष्य स्वल्प कामवाला होता है ॥ २० ॥

मन्दे नक्रेऽल्पभाषी त्वथ रिपुगृहपे वा सुधां-
शावदृश्ये चेदर्धे संस्थितेऽङ्गो भवति जनि-
मतां नेत्रयोः क्रूरयुक्ते । पश्येत्क्षीणं न चन्द्रं
यदि भृगुतनयः सूर्यजः पश्यतीन्दुं स्वक्ष
चन्द्रे नभःस्थैर्यदि मदनगतैर्वीक्ष्यते पापखेटैः ॥

मकरराशिका शनि हो तो अल्प बोलनेवाला होता है. यदि छठे घरका पति अथवा चंद्रमा क्रूरग्रहसे युक्त होके (अदृश्यार्द्ध) सप्तमभावके भोग्यांशसे लेके ८ । ९ । १० । ११ । १२ । लग्नका भुक्तांश इतनी जगहमें कहीं हो तो जन्मनेवालेके नेत्रोंमें कोई चिह्न हो. यदि क्षीण चंद्रमाको शुक्र नहीं देखता हो किन्तु शनि देखता हो अथवा कर्कराशिपर चंद्रमा स्थित

१-पश्येत्क्षीणे न चन्द्रम् इति पाठान्तरम् ।

हो तब दशवें अथवा ७ घरमें स्थित हुए पापग्रहोंकरके वह चन्द्रमा देखा जाता हो तो- ॥ २१ ॥

स्यान्नूनं चाल्पनेत्रस्तदनु तनुगतं भूमिजं वा क्षपेशं पश्येद्वाचस्पतिश्चेदसुरकुलगुरुः काणदृङ् मानवः स्यात् । विच्छाया तिग्मभानोः क्षितिभुवि च परो भागगे दृङ् नराणां सौम्ये चिह्नं दृशि स्यादथ वपुषि लये भार्गवे क्रूरदृष्टे ॥ २२ ॥

वह नर छोटे नेत्रोंवाला होता है. यदि इस योगके पीछे लग्नमें स्थितहुए मंगलको अथवा चंद्रमाको बृहस्पति अथवा शुक्र देखता हो तो वह नर काणा होता है. यदि सूर्यसे अगली राशिपर प्राप्तहुआ मंगल हो तो मनुष्योंकी दृष्टि कांतिरहित होती है और सूर्यसे अगली राशिपर बुध होवे तो नेत्रमें चिह्न होय. यदि लग्नमें आठवें घरमें शुक्र हो पापग्रहसे देखा जाता हो तो-॥२२॥

नेत्रे पीडाऽश्रुपातात्तदनु शशिकुजावेकभावे यदाऽक्ष्णोश्चिह्नं किंचित्तदानीं ग्रहबलवशतो दृश्यमेवं सुधीभिः । मार्तण्डे रिःफयाते तदनु नवमगे पुत्रगे वा खलाढ्ये दृष्टे वा स्यान्मनस्वी सुविकलनयनः सूर्यजे व्याधियुक्तः ॥ २३ ॥

—उस पुरुषके आंसू गिरनेके हेतुसे नेत्रमें पीडा होती है. यदि चन्द्रमा और मंगल एक नवांशपर स्थित होवें तो नेत्रोंमें कुछ चिह्न होवे. पंडितजनोंने योगकारक ग्रहोंके बलके विचारसे यह सब हाल कहना. यदि क्रूरग्रहोंसे दृष्ट अथवा क्रूरग्रहोंकरके संयुक्तहुआ सूर्य १२। ९। ५ इन घरोंमें पडा हो तो वह नर बुरे (खराब) नेत्रोंवाला हो अथवा १२। ९। ५ इनही घरोंमें पापग्रहोंसे दृष्ट अथवा युक्त होके शनि पडा हो तो वह नर रोगी होवे ॥ २३ ॥

चन्द्रं पृष्ठोदयस्थं हिबुकगृहगतः सूर्यसूनुः
प्रपश्येदित्थं लग्नाधिनाथे क्रियभवनगते
मानवो वामनः स्यात् । कोशे पीयूषभानु-
र्जलचरगृहगः सौरिणा संयुतो वा मार्तण्डे
भूमिकेन्द्रे यदि भवति तदा दद्रुमान्
पुरुषः स्यात् ॥ २४ ॥

पृष्ठोदय (१। २। ४। ९। १० इन राशियों) पर स्थित हुए चन्द्रमाको चौथे घरमें बैठाहुआ शनि देखता हो और इसी योगसमयमें लग्नका स्वामी मेषराशिपर स्थित हो तो वह नर वामन हो. जलचरराशिपर स्थित हुआ चन्द्रमा दूसरे घरमें स्थित हो अथवा शनिसे युक्त हो अथवा सूर्य लग्नमें हो तो वह नर दद्रु (दाद) रोगवाला होता है ॥ २४ ॥

दृष्टे क्रूरैर्न सौम्यैर्यदि रिपुगृहपे चोडुपे प्लीह-

वान् स्यादेवं कामाङ्गनाथे तदनु रविसुत-
स्तुर्यगो नष्टदृष्टिः । प्लीही स्याल्लग्ननाथे
दिनकरतनये क्रूरनिष्पीडिते चेत्सौख्या-
युङ्मानवः स्यात्तदनु सदनगे प्लीहवान्
हर्षहीनः ॥ २५ ॥

यदि शत्रुघर (छठे घर) का पतिहुआ चंद्रमा पापग्रहों-
करके दृष्ट हो और सौम्यग्रहोंकी दृष्टि नहीं होवे तो प्लीहा
(तापतिल्ली) रोगवान् हो. इसी प्रकार सातवें घरका पति
अथवा लग्नका पति चंद्रमा केवल पाप ग्रहोंकरके ही देखा
गया हो तो भी प्लीहारोगवाला हो और पापग्रहोंकरके दृष्टहुआ
शनि चौथे घरमें बैठा हो तो अंधा होवे. दृष्टि अथवा योग-
करके क्रूरग्रहोंसे विकलहुआ शनि लग्नका पति होवे तो वह नर
सुखरहित हो. शनि लग्नमें पडा हो तो वह नर प्लीहा (ताप-
तिल्ली) रोगवान् और आनंदरहित हो ॥ २५ ॥

क्रूराः केन्द्रालयस्था वपुषि च विकलाः
केन्द्रगौ पुष्पवन्तौ किंवा लग्ने प्रपश्येत्कावि-
मिनतनयः श्रोणिभागेऽङ्गहीनः । काव्यः
पातालयायी सुरपतिगुरुणा क्वापि युक्तोऽर्क-
सूनुर्भौमो वा रौहिणेयो भवति हि विकलः
श्रोणिभागे भुजेऽङ्घ्रौ ॥ २६ ॥

यदि क्रूरग्रह केन्द्रमें स्थित हों तो जन्मनेवाला नर विकल शरीरवाला होता है. यदि सूर्य चन्द्रमा (एकत्रही) केन्द्रमें पडे हों तो भी विकल शरीरवाला हो अथवा लग्नमें स्थितहुए शुक्रको शनि देखता हो तो कटिभागपर अंगहीन हो. शुक्र चौथे घरमें बैठा हो, बृहस्पतिकरके युक्त हुआ शनि, मंगल अथवा बुध जहां कहीं (किसी घरमें भी) स्थित हो तो कटिकी जगह, हाथ वा पैरकी जगह विकल (अंगहीन) होता है ॥

आयुःपुण्याधिनाथौ यदि खलखचराच्चतुर्यगौ पापयुक्तौ जङ्घावैकल्यवान् स्यात् कुजशनिसहिते सैंहिकेये च सूर्ये । द्वेष्यस्थे तद्वदेवं शनिरिपुगृहपौ रिःफयातौ खलैश्चेद्दृष्टौ तद्वत्तदानीं रविविधुरविजा वैरिरन्ध्रालयस्थाः ॥ २७ ॥ स्यादार्तिः पञ्चशाखे तदनु दशमगे सूर्यसूनौ सिताढ्ये क्लीबः स्यात् सूर्यसूनौ व्ययरिपुगृहगे शुक्रतः क्लीबरूपः । पश्येत्सूर्यालयस्थो मदनभवनगं भूमिसूनुं सुधांशुश्चार्कः काणश्च कर्के यदि शुभगृहपो मेषसिंहालिनक्रे ॥ २८ ॥

आठवें और नववें घरके पति पापग्रहोंसे ही चौथे घरमें बैठे हों और पापग्रहोंसे युक्त हों तो जांघ नहीं हों अर्थात् पांगला हो.

यदि मंगल और शनिसे युक्तहुआ राहु छठे घरमें बैठा हो अथवा शनि मंगलसे युक्तहुआ सूर्य छठे घरमें बैठा हो तो उसी प्रकार पांगला होता है. शनि और छठे घरका पति क्रूर-ग्रहोंसे देखेगये हों और १२ घरमें स्थित हों तो भी पांगला होता है. यदि सूर्य, चन्द्रमा, शनि ६ । ८ वें घरमें स्थित हों तो जन्मनेवालेके हाथमें पीडा होती है. जहाँ शुक्रसे युक्तहुआ शनि दशवें घरमें बैठा हो तो नपुंसक होता है. यदि शुक्र बैठा हो उस राशिसे १२ । ६ घरमें शनि स्थित हो तो नपुंसक-सरीखा रूपवाला होता है. यदि सिंहराशिपर स्थित हुआ चन्द्रमा सातवें घरमें बैठेहुए मंगलको देखता हो तो काणा होता है और कर्कराशिपर स्थितहुआ सूर्य सातवें घरमें स्थित हुए मंगलको देखता हो तो भी काणा होता है. यदि नववें घरका पति मेष, सिंह, वृश्चिक, मकर इन राशियोंपर स्थित हो तब यह योग पूर्ण जानना ॥ २७ ॥ २८ ॥

अन्योऽन्यं पश्यतश्चेत्तरणिहिमकरौ तत्त-
नूजौ मिथो वा भूसूनुः पश्यतीनं समभवन-
गतं त्वङ्गचन्द्रौ यदौजे । ओजर्क्षे युग्म-
राशौ हिमकरशशिजौ भूसुतेनेक्षितौ चेत्
पुंराशौ लग्नशुक्रौ तदनु हिमकरः क्लीब-
योगाः षडेते ॥ २९ ॥

विषमराशि और समराशिपर स्थितहुए सूर्य-चंद्रमा आप-समें देखते हों अर्थात् विषमराशिका सूर्य समराशिके चंद्रमाको

और वह चंद्रमा सूर्यको देखता हो यह एक योग. और इनके पुत्र अर्थात् शनि,बुध ये भी विषमराशिपर इसी प्रकारसे स्थित हुए आपसमें देखते हों यह दूसरा योग. समराशिके सूर्यको विषमराशिगत मंगल देखता हो, मंगलको सूर्य देखता हो यह तीसरा योग. विषमराशिके लग्न और चंद्रमा समराशिगत मंगलकरके दृष्ट यह चौथा योग. चंद्रमा, बुध ये क्रमकरके विषम समराशिपर हों और मंगलकरके देखेजाते हों यह पांचवां योग. लग्न, शुक्र, चंद्रमा ये पुरुषग्रहकी राशिपर तथा नवांशकमें स्थित हों यह छठा योग. ऐसे छः योग नपुंसक करनेवाले हैं॥

आयुःस्थानोपयाते धरणिसुतयुते भार्गवे
वातकोपात् काव्ये भौमेन युक्ते कुजभवन-
गते भूमिजा मुष्कवृद्धिः । भौमर्क्षे काव्य-
चन्द्रौ सुरपतिगुरुणा सूर्यजेनाथ दृष्टौ नूनं
स्यान्मानवानां जनुषि कललजा मुष्कवृद्धि-
र्नितान्तम् ॥ ३० ॥

मंगलसे युक्तहुआ शुक्र आठवें घरमें हो तो वातकोपसे वृषणवृद्धि हो (अंडकोश बढ जावे). मंगलसे युंक्तहुआ शुक्र मंगलकी राशिपर स्थित हो तो पृथ्वीके संसर्गसे वातकोपसे वृषण बढ जाते हैं.जिन मनुष्योंके जन्मसमयमें मंगलकी राशिपर स्थितहुए शुक्र, चंद्रमा, बृहस्पति शनिसे देखेगये हों तो उनके कलल (शुक्रशोणित संसर्ग)से अत्यंत वृषण बढते हैं॥

क्रूरैर्दृष्टे विलग्ने सुविकृतरदनश्चापगौ मेष-
संज्ञे खल्वाटः पापलग्ने धनुषि गवि तथा-
ऽऽलोकिते क्रूरखेटैः। धर्माथान्त्यात्मजस्था
यदि खलखचरा बन्धभाक् पूरुषः स्यादेवं
लग्ने क्रिये वा धनुषि गवि तथा रश्मिजं
बन्धनं नुः ॥ ३१ ॥

धन, वृष, मेष इन राशियोंका लग्न पापग्रहोंसे देखागया हो तो दांतोंमें रोग हो. पापग्रहोंसे युक्तहुआ लग्न धन तथा वृष-राशिका हो, पूर्वोक्त प्रकारसे पापग्रहोंकरके देखा भी जाता हो तो जन्मनेवाला जन खल्वाट(गंजा) होता है और ९।२।१२।५ इन घरोंमें पापग्रह हों तो बंध (कैद आदि) में बंधनेवाला हो; इसी प्रकार मेष,धन,वृष ये लग्न क्रूरग्रहोंसे युक्त हों तो मनुष्यके रस्सी आदिसे बंधन होता है ॥ ३१ ॥

दुर्गन्धिर्दानवेज्ये शनिभवनगते मानवो
विग्रहे स्याद् द्वेष्याधीशे बुधर्क्षे तदनु मक-
रगे तद्वदत्राथ काव्ये । केन्द्रस्थे तेन
युक् स्यादथ कविरविजौ स्वीयहद्दायुतौ
चेत्तद्वच्चन्द्रेऽजयाते तनुसदनगते चानने
स्याद्विगन्धः ॥ ३२ ॥

शनिकी राशिपर शुक्र हो तो जन्मनेवाले मनुष्यके शरीर-पर दुर्गंध होता है. छठे घरका पति ३।६।१० इन राशियों-

पर हो तो भी शरीरमें दुर्गंधवाला हो. यदि बुधकी राशिपर स्थित हुआ शुक्र बुधसे युक्त होके केंद्रस्थानमें पडा हो तो शरीरमें दुर्गंधवाला होता है. शुक्र, शनि अपने त्रिंशांशमें प्राप्त होवें तो भी शरीरमें दुर्गंधवाला होता है. मेषराशिका चंद्रमा लग्नमें पडा हो तो मुखमें दुर्गंध होता है ॥ ३२ ॥

एवं ग्रहाणां सदसत्फलानां योगाद् ग्रहज्ञै-
रनुयोजनीयम् । शुभाशुभं जन्मनि मान-
वानां फलं सुमत्या प्रविचार्य नूनम् ॥ ३३ ॥

ग्रहोंको जाननेवाले पंडितोंने शुभाशुभफलदायी ग्रहोंके योगसे इस प्रकारसे योजना करनी, मनुष्योंके जन्मसमयमें शुभाशुभफल अपनी बुद्धिसे विचारकर निश्चयसे कहना चाहिये॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलङ्काराख्ये
जातके मञ्जुलेऽस्मिन् । योगाध्यायः श्रीगणे-
शेन वर्यैर्वृत्तैर्युक्तो रामरामैः प्रणीतः ॥३४॥

इति श्रीजातकालङ्कारे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

मनोहर छंदकरके रचेहुए पंडितोंको प्रसन्न करनेवाले मनोहर इस जातकालंकारविषे श्रीगणेशकविने उत्तम तैंतीस श्लोकोंकरके यह योगाध्याय समाप्त किया ॥ ३४ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

विषकन्याध्यायः ४.

भौजङ्गे कृत्तिकायां शतभिषजि तथा सूर्य-
मन्दारवारे भद्रासंज्ञे तिथौ या किल जनन-
मियात्सा कुमारी विषाख्या। लग्नस्थौ सौम्य-
खेटावशुभगगनगश्चैक आस्ते ततो द्वौ वैरि-
क्षेत्रानुयातौ यदि जनुषि तदा सा कुमारी
विषाख्या ॥ १ ॥

आश्लेषा, कृत्तिका, शतभिषा इन नक्षत्रोंमें सूर्य, शनि, मंगलवार और भद्रासंज्ञक तिथियोंमें कन्या जन्मे तो वह विष-कन्या होती है अर्थात् आश्लेषा रविवार द्वितीया एक योग १, कृत्तिका शनिवार सप्तमी दूसरा योग २, शतभिषा मंगलवार द्वादशी यह तीसरा योग ३ है, इनमें जन्मनेवाली विषकन्या होवे और दो शुभग्रह लग्नमें स्थित हों, एक पापग्रह दशवें घरमें स्थित हो, दो पापग्रह छठे घरमें हों तब जन्मनेवाली वह लडकी विषकन्या कहलाती है ॥ १ ॥

मन्दाश्लेषाद्वितीया यदि तदनु कुजे सप्तमी
वारुणर्क्षे द्वादश्यां च द्विदैवं दिनमणिदिवसे
यज्जनिः सा विषाख्या । धर्मस्थो भूमिसूनु-
स्तनुसदनगतः सूर्यसूनुस्तदानीं मार्तण्डः
सूनुयातो यदि जनिसमये सा कुमारी विषाख्या॥

शनिवारमें आश्लेषा नक्षत्र द्वितीया तिथि हो, मंगलमें सप्तमी शतभिषा नक्षत्र हो, रविवारमें विशाखा द्वादशी तिथि हो इन तीन योगोंमें जिसका जन्म हो वह विषकन्या कहलाती है, नववें घरमें मंगल हो, शनि लग्नमें हो, सूर्य पांचवें घरमें हो तब जन्मनेवाली विषकन्या होती है ॥ २ ॥

विषकन्यायोगपरिहारः ।

लग्नादिन्दोः शुभो वा यदि मदनपतिर्द्यून-
यायी विषाख्या दोषं चैवानपत्यं तदनु च
नियतं हन्ति वैधव्यदोषम् । इत्थं ज्ञेयं
ग्रहज्ञैः सुमतिभिरखिलं योगजातं ग्रहाणा-
मार्यैरार्यानुमत्या मतमिह गदितं जातके
जातकानाम् ॥ ३ ॥

यदि सातवें घरका पति अथवा शुभग्रह लग्नसे वा चंद्रमासे सातवें घरमें बैठा हो तो विषकन्याका दोष उससे होनेवाला संतानहीन फल और वैधव्यदोष दूर होता है; इस उक्त प्रकारसे इस जातकालंकारमें दैवज्ञ सभ्यजनोंके अनुमत करके जातकोंके संपूर्ण योग कहे हैं. सो उत्तम बुद्धिवाले दैवज्ञजनोंने इसी प्रकारसे जानने अर्थात् ये संपूर्ण योग इसी प्रकारसे बताने चाहिये ॥ ३ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलङ्काराख्ये
जातके मञ्जुलेऽस्मिन् । कन्याध्यायः

श्रीगणेशेन वर्यैर्वृत्तैर्युक्तो वह्निसंख्यैर्विषाख्यः॥४॥

इति श्रीजातकालंकारे चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

मनोहर छन्दोंकरके रचे हुए पण्डितजनोंको संतुष्ट करनेवाले मनोहर इस जातकालंकारविषे उत्तम तीन श्लोकोंकरके श्रीगणेश कविने विषकन्या अध्याय कहा है ॥ ४ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

आयुर्दायाध्यायः ५.

आयुर्मूलं जन्मिनां जीवनं च ह्याजीवानां निर्जराणां सुधेव। एवं प्राहुः पूर्वमाचार्यवर्यास्तस्मादायुर्दायमेनं प्रवक्ष्ये ॥ १ ॥

जन्मनेवालोंके जीवनेका मूल आयु है जैसे देवताओंको अमृत है वैसे आयु है, इस प्रकारसे पहलेके आचार्योंने कहा है, इसीवास्ते इस आयुर्दाय अध्यायको कहूंगा ॥ १ ॥

लग्नाधीशोऽतिवीर्यो यदि शुभविहगैरीक्षितः केन्द्रयातैर्दद्यादायुः सुदीर्घं गुणगणसहितं श्रीयुतं मानवानाम्। सौम्याः केन्द्रालयस्था जनुषि च रजनीनायके स्वीयतुङ्गे वीर्याढ्ये लग्ननाथे वपुषि च शरदां षष्टिरायुर्नराणाम् ॥ २ ॥

लग्नका स्वामी केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) में पडेहुए शुभ ग्रहोंकरके दृष्ट हो और अत्यन्त बलवान् हो अथवा बुध, बृहस्पति, शुक्र ये अपने क्षेत्रपर हों, चंद्रमा स्वोच्चका हो, लग्नका पति बलिष्ठ होके लग्नमें पडा हो तो जन्मनेवाले नरोंकी साठ वर्षकी अवस्था होती है ॥ २ ॥

सौम्याः केन्द्रालयस्था वपुषि सुरगुरौ लग्नतो वा सुधांशोरायुर्युक्तं न दृष्टं न च गगनगतैः सप्ततिर्वत्सराणाम् । याता मूलत्रिकोणे शुभगगनचराः स्वीयतुङ्गे सुरेज्ये लग्नाधीशेऽतिवीर्ये गगनवसुसमातुल्यमायुर्नराणाम् ॥ ३ ॥

सौम्यग्रह केन्द्र (१ । ४ । ७ । १०) में स्थित हों और बृहस्पति लग्नमें ही हो और ये सब दशवें घरमें स्थितहुए क्रूरग्रहोंकरके दृष्ट नहीं हों तो सत्तर वर्षकी आयु हो. शुभग्रह लग्नमें तथा नववें पांचवें घरमें स्थित हों तथा बृहस्पति उच्चका हो और लग्नपति अतिबलिष्ठ होवे तो मनुष्योंकी अस्सी वर्षकी अवस्था हो ॥ ३ ॥

सौम्ये केन्द्रेऽतिदीर्घे यदि निधनपदं खेटहीनं समाः स्युस्त्रिंशत्सौम्येक्षितं चेद्गगनहिमकरैः संयुतोऽथ स्वभे चेत् । स्वत्र्यंशे

चामरेज्ये मुनिनयनमितं स्वर्क्षगो लग्नगो वा चन्द्रे द्यूने शुभश्चेद्गगनरसमितं कोणगाः सौम्यखेटाः ॥ ४ ॥

बुध केन्द्रस्थानमें पडा हो अत्यंत बलिष्ठ हो और आठवें घरमें कोई ग्रह न हो तो तीस वर्षकी आयु होती है. यदि वह आठवां घर शुभ ग्रहोंकरके देखा जाता हो तो चालीस वर्षकी अवस्था हो. बृहस्पति अपनी राशिपर अपने द्रेष्काणपर हो तो सत्ताईस वर्षकी अवस्था हो. चन्द्रमा अपनी राशिका हो अथवा लग्नमें पडा हो और सातवें घरमें शुभ ग्रह बैठा हो तो साठ वर्षकी अवस्था हो ॥ ४ ॥

कीटे लग्ने सुरेज्ये यदि भवति तदा खाष्टतुल्यं लयेशो धर्मेऽङ्के चाङ्गनाथे निधनभवनगे क्रूरदृष्टेऽब्धिहस्ताः। लग्नाधीशाष्टनाथौ लयभवनगतौ सप्तविंशद्विलग्ने क्रूरेज्यौ चन्द्रदृष्टौ यदि निधनगतः कश्चनास्ते द्विपक्षाः ॥ ५ ॥

यदि शुभग्रह ९ । ५ घरमें हो और कर्क लग्नपर बृहस्पति हो तो अस्सी वर्षकी अवस्था होती है. आठवें घरका पति नववें घरमें हो और लग्नपति क्रूरग्रहसे दृष्ट होके आठवें घरमें बैठा हो तो चौबीस वर्षकी अवस्था हो. लग्नका पति तथा

अष्टम घरका पति आठवें घरमें होवे तो सत्ताईस वर्षकी अवस्था हो. यदि पापग्रहसे युक्तहुआ बृहस्पति लग्नमें स्थित हो और चन्द्रमाकरके दृष्ट हो, आठवें घरमें अन्य कोई ग्रह बैठा हो तो बाईस वर्षकी अवस्था होती है ॥ ५ ॥

लग्नेन्दू क्रूरहीनौ वपुषि सुरगुरौ रन्ध्रभं खेटहीनं केन्द्रे सौम्ये खशैलाः सितविबुधगुरू स्याच्छतं केन्द्रगौ चेत् । वागीशे कर्कलग्ने शतमिह भृगुजे केन्द्रगेऽथार्कसूनौ धर्माङ्गस्थे सुधांशौ व्ययनवमगते हायनानां शतं स्यात् ॥ ६ ॥

लग्न और चन्द्र क्रूरग्रहोंसे रहित और लग्नमें बृहस्पति हो, आठवें घरमें कोई ग्रह नहीं हो, केन्द्रमें शुभ ग्रह हों तो सत्तर वर्षकी अवस्था हो. यदि शुक्र, बृहस्पति केंद्रमें पडे हों तो सौ वर्षकी अवस्था हो. यदि बृहस्पति कर्कका हो और शुक्र केंद्रमें पडा हो तो सौवर्षकी अवस्था होती है. शनि नववें घरमें हो अथवा लग्नमें हो, चन्द्रमा बारहवें अथवा नववें घरमें हो तो सौ वर्षकी आयु हो; ये सब योग यश संपत्तिके भी सूचक जानने ॥ ६ ॥

धीकेन्द्रायुर्नवस्था यदि खलखचरा नो गुरोर्भे विलग्ने केन्द्रे काव्ये गुरौ वा शुभ-

मपि निधनं सौम्यदृष्टं शतं स्यात् । लग्ना-
दिन्दोर्न खेटा यदि निधनगता वीर्यभाजौ
सितेज्यौ पूर्णायुः स्वीयराशौ शुभगगन-
चराः षष्टिरङ्गोच्चगेऽब्जे ॥ ७ ॥

क्रूर ग्रह ५।१।४।७।१०।८।९ इन घरोंमें नहीं हों और धन मीनराशिपर तथा लग्नमें वा केंद्रमें शुक्र अथवा बृहस्पति हो और नववां आठवां घर शुभग्रहसे देखाजाता हो तो सौ वर्षकी अवस्था होती है. यदि लग्नसे अथवा चन्द्र-मासे आठवें घरमें कोई ग्रह नहीं हो और शुक्र, बृहस्पति बल-वंत होवें तो पूर्ण आयु (१२० वर्षकी) हो. यदि शुभग्रह अपनी राशिपर हों और लग्नमें तथा वृषका चंद्रमा हो तो साठ वर्षकी अवस्था होती है ॥ ७ ॥

कोदण्डान्त्यार्धमङ्गं यदि सकलखगाः स्वोच्च-
गा ज्ञे जिनांशैर्गोस्थे पूर्णं च केन्द्रे सुर-
पतिभृगुजौ लाभगेऽब्जे परायुः । शुक्रे मीने
तनुस्थे निधनगृहगते सौम्यदृष्टे सुधांशौ
जीवे केन्द्रे शतं स्यादथ तनुगृहपे छिद्रगे
पुष्करेऽब्जे ॥ ८ ॥ वागीशे वीर्ययुक्ते नवम-
भवनगाः सर्वखेटाः शतायुः कर्केऽङ्गे जीव-
चन्द्रौ सहजरिपुभवे सत्कविज्ञौ च केन्द्रे ।

केन्द्रे सूर्यारमन्दा गुरुनवलवगा वाक्पतौ लग्नयाते व्ययस्थानेषु शेषाः शरगजतुलितं स्यान्नराणां तदाऽऽयुः ॥ ९ ॥

धनु राशिका पिछला अर्द्धभाग लग्न हो तहां सब उच्चके हों और बुध चौबीस अंशोंसे वृषका हो तब पूर्ण आयु (१२० वर्षकी) होती है. यदि शुक्र, बृहस्पति केन्द्रमें स्थित हों और चन्द्रमा ग्यारहवें घरमें हो तो परम आयु होती है. मीन राशिका शुक्र लग्नमें हो और सौम्य ग्रहोंकरके देखाहुआ चंद्रमा आठवें घरमें हो, बृहस्पति केन्द्रमें हो तो सौ वर्षकी आयु होती है. लग्नका पति आठवें घरमें हो, चन्द्रमा दशवें घरमें हो, बृहस्पति बलवान् हो, अन्य सब ग्रह नववें घरमें हों तो सौ वर्षकी अवस्था होती है. कर्क लग्न हो, बृहस्पति और चन्द्रमा ३।६।११ इन घरोंमें हों और शुभग्रहोंसे युक्तहुए शुक्र, बुध केंद्रस्थानमें हों तो भी सौ वर्षकी आयु होती है. सूर्य, मंगल, शनि ये बृहस्पतिके नवांशकमें स्थित होके केन्द्रमें बैठे हों और बृहस्पति लग्नमें स्थित हो, अन्य सब ग्रह अष्टमस्थानमें नहीं हों तो मनुष्योंकी अवस्था पचासी वर्षकी होती है ८॥९॥

क्रूराः सौम्यांशयाता उपचयगृहगाः कातराः कण्टकस्थाः सौम्या व्योमार्कसंख्या यदि तनुपकुजौ रन्ध्रगौ नो परायुः। केन्द्रे लग्नेश-जीवौ नवसुतनिधने कण्टके नो खलाख्याः

संपूर्णं पापखेटा यदि गुरुजलगा जीवभावे च सौम्याः ॥ १०॥ युग्मर्क्षांशं गता वा व्यय-धनगृहगाश्चेच्छुभाः शीतभानुः संपूर्णो लग्न-यायी शतमिह जनिनामिन्दिरामन्दिरं स्यात्। लग्नेशे सौम्ययुक्ते वपुषि च लयपे रन्ध्रगे नान्यदृष्टे विंशत्केन्द्रे लयेशे बलवियुजि तथा लग्नपे त्रिंशदायुः ॥ ११ ॥

पापग्रह शुभग्रहोंके नवांशकमें स्थित होके ३।६।१०।११ इन घरोंमें पडे हों तो डरपोक (युद्धमें भागनेवाले) नर होते हैं. यदि शुभग्रह केन्द्रस्थानमें पडे हों तो एक सौ वीस वर्षकी परम आयु होती है, परन्तु इस परम आयुयोगमें शनि, मंगल आठवें घरमें हों तो परम आयु नहीं होती है. लग्नपति और बृह-स्पति केंद्रमें हों और ९।५।८ इन घरोंमें तथा केंद्रमें पापग्रह नहीं हों तो पूर्ण आयु होती है. यदि पापग्रह नववें चौथे घरमें हों और शुभग्रह बृहस्पतिके नवांशकमें हों अथवा समराशिके नवांशकमें स्थित हों और शुभ ग्रह १२।२ घरमें हों पूर्ण चंद्रमा लग्नमें स्थित हो तो संपत्ति लक्ष्मीसहितहुआ जन सौ वर्षतक जीवित रहता है. यदि शुभग्रहोंसे युक्तहुआ लग्नपति लग्नमें बैठा हो, अन्य-ग्रहों करके देखा नहीं जाता हो और अष्टम घरका पति आठवें ही पडा हो तो बीस वर्षकी अवस्थावाला होता है और बल-हीनहुए लग्नपति तथा अष्टम घरके पति केंद्रमें पडे हों तो तीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ १० ॥ ११ ॥

इन्दावापोक्लिमस्थे तदनु तनुपतौ निर्बले पापदृष्टे दन्तैस्तुल्यं ततोऽर्कः खलखग-विवरे लग्नगोऽब्जत्रिसंख्यम् । रिःफे केन्द्रे सुरेज्ये गुरुरिपुसहजे स्यात्सपापेऽङ्गनाथे रामाब्दं कर्कलग्ने कुजतुहिनकरौ केन्द्ररन्ध्रं ग्रहोनम् ॥ १२ ॥

चंद्रमा आपोक्लिम (३।६।९।१२)इन घरोंमें बैठा हो और लग्नपतिभी ३ । ६ । ९ । १२ इनही घरोंमें हो, ये दोनों निर्बल हों तथा पापग्रहोंकरके दृष्ट हों तो बत्तीस वर्षकी आयु हो. यदि क्रूरग्रहोंके मध्यमें आयाहुआ सूर्य लग्नमें बैठा हो तो इकतीस वर्षकी आयु होती है. बृहस्पति केन्द्रमें हो अथवा बारहवें घरमें हो और लग्नका पति पापग्रहसे युक्त होके ९ । ६ । ३ इन घरोंमें बैठा हो तो तीन वर्षकी अवस्था होती है. कर्कलग्न हो, चन्द्रमा मंगल केंद्र (१।४।७।१०) स्थानमें हों और ८ घरमें कोई ग्रह नहीं हो तो भी-॥ १२ ॥

रामाब्दं स्याल्लयेशे वपुषि च निधनं सौम्य-हीनं खवेदा लग्नेशो रन्ध्रयातो वपुषि निध-नपः स्यान्नृणां बाणसंख्यम् । नक्रे तिग्मां-शुमन्दौ सहजरिपुगतौ कण्टके रन्ध्रनाथे पारावाराब्धिसंख्यं तदनु शुभखगाः सल्ल-वर्क्षेऽत्र खाग्निः ॥ १३ ॥

तीन ही वर्षतककी आयु होती है. आठवें घरका पति लग्नमें हो, आठवें घरमें शुभग्रह नहीं पडा हो तो चालीस वर्षकी अवस्था हो. लग्नका पति आठवें घरमें हो और आठवें घरका पति लग्नमें हो तो मनुष्योंकी पांच ही वर्षकी आयु होती है. मकरराशिपर स्थित हुए शनि, सूर्य तीसरे वा छठे घरमें हों और अष्टम घरका पति केंद्रमें हो तो चालीस वर्षकी अवस्था होती है. यदि शुभग्रह शुभग्रहोंके नवांशकमें अथवा शुभग्रहोंकी राशिपर स्थित हों तो तीस वर्षकी आयु होती है ॥ १३ ॥

क्रूरैर्दृष्टेऽङ्गनाथे यदि शुभविहगा वीर्यवन्तः सुधांशौ संस्थे सौम्ये गणे चेद्गुणमुनितुलितं रन्ध्रगैर्मध्यमायुः । स्याच्चन्द्रादह्नि पापैरथ तपनसुते व्यङ्गलग्ने हि याते रिःफेशे रन्ध्रनाथे यदि बलरहिते कङ्कपत्राक्षिसंख्यम्॥१४॥

यदि लग्नका पति पापग्रहोंकरके दृष्ट हो और शुभग्रह बलवंत हों और चंद्रमा शुभग्रहके नवांशमें स्थित होके किसी घरमें बैठा हो तो तिहत्तर वर्षकी अवस्था होती है. चंद्रमासे आठवें घरमें पापग्रह हों, दिनमें जन्म भया हो तो मध्यम आयु होती है. इससे अनंतर शनि द्विस्वभावसंज्ञक लग्नमें पडा हो और बारहवें घरका पति तथा अष्टम घरका पति बलहीन हों तो पचीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ १४ ॥

कर्केऽङ्के सप्तसप्तौ खलविहगयुते पुष्करस्थे द्विजेशे केन्द्रे याते सुरेज्ये शरविशिखमितं पुष्करे नीरगे वा । सौम्ये पीयूषभानौ व्यय-निधनगते देहगे वा कवीज्यावेकर्क्षे व्योम-बाणैर्व्ययरिपुनिधने लग्ननाथान्यचन्द्रे ॥१५॥

कर्कलग्नमें सूर्य हो और पापग्रहसे युक्तहुआ चन्द्रमा दशवें घरमें स्थित हो और बृहस्पति केन्द्रमें हो तो पचपन वर्षकी अवस्था होती है. बुध दशवें घरमें हो वा चौथे घरमें हो और चन्द्रमा बारहवें आठवें घरमें वा लग्नमें हो और शुक्र, बृहस्पाति एकराशिपर कहीं स्थित हों तो पचास वर्षकी आयु होती है और लग्नपतिसे युक्तहुआ चन्द्रमा १२ । ६ । ८ इन घरोंमें पडा हो-॥ १५ ॥

शून्यंशे लग्ननाथे भुजगशरमितं स्यादथो सौम्यखेटा रन्ध्रोना देहनाथो व्ययरिपुनि-धने पापयुक् षष्टिरायुः। राशीशो लग्ननाथो दिनमणिसहितो मृत्युगो वाक्पतिश्चेन्नो केन्द्रे षष्टिरायुर्वपुषि दिनपतिः शत्रुभौमा-न्वितश्चेत् ॥ १६ ॥

--और लग्नेश शनिके नवांशकमें स्थित हो तो अठावन वर्षकी आयु होती है. यदि शुभग्रह अष्टमभावके विना अन्य

१-विहगगते इति पाठान्तरम् ।

कहीं स्थित हों और लग्नका पति पापग्रहसे युक्त होके १२ । ६ । ८ इन घरोंमें बैठा हो तो साठ वर्षकी अवस्था होती है. चन्द्रमाकी राशिका पति सूर्यसहित होके ८ घरमें पडे और लग्नेश भी आठवें हो और बृहस्पति केन्द्रमें नहीं हो तो साठ वर्षकी अवस्था होती है. अपने शत्रु और मंगलसे युक्त हुआ सूर्य लग्नमें हो-॥ १६ ॥

वागीशे हीनवीर्ये व्ययतनुजगते यामिनीशे
खशैला धर्मे सर्वैः परायुः खलखगलवगैः
केन्द्रयातैरशीतिः । क्रूरैः क्रूरर्क्षयातैः शुभ-
भवनगतैः सौम्यखेटैः सवीर्यैर्लग्नेशे स्यात्
परायुः सुतभवनगतैः षष्टिरायुर्नराणाम् ॥१७॥

-बृहस्पति बलहीन हो और चन्द्रमा १२ । ५ घरमें बैठा हो तो सत्तर वर्षकी अवस्था होती है और सब सौम्यग्रह नववें स्थानमें पडे हों तो परम आयु होवे. पापग्रहोंके नवांशकमें प्राप्त होके केन्द्रमें पडे हों तो अस्सी वर्षकी अवस्था होती है. पाप ग्रहोंकी राशिपर स्थित हो और शुभग्रह सौम्यग्रहोंकी राशियोंपर स्थित हों और लग्नका पति बलवान् हो तो परम आयु होती है. सब सौम्य पापग्रह पांचवें घरमें स्थित हों तो मनुष्योंकी साठ वर्षकी अवस्था होती है ॥ १७ ॥

सारङ्गस्यान्त्यभागे यदि वपुषि गते चाद्य-
भागे च केन्द्रे सौम्यैः खेटैः शतं स्याद्वसु-
सहजसुखे स्याच्चिरायुः समस्तैः । लग्नात्

प्रालेयभानोर्निधनसदनपे रिःफकेन्द्रेऽष्ट-
विंशत्केन्द्रे सौम्यग्रहोने यदि मृतिभवने
कश्चिदास्ते खरामाः ॥ १८ ॥

धनुराशिके पिछले भागका नवांशक लग्नमें प्राप्त हो और शुभग्रह प्रथम भागके नवांशमें स्थित होके केन्द्रमें बैठे हों तो सौ वर्षकी अवस्था होती है. तीसरे, चौथे, आठवें घरमें सब ग्रह स्थित हों तो मनुष्यकी दीर्घ आयु होती है. लग्नसे अथवा चन्द्रमासे बारहवें घरमें अथवा केंद्रमें अष्टम घरका पति हो तो अठाईस वर्षकी अवस्था होती है. केन्द्रस्थानमें शुभ ग्रह नहीं हों और आठवें घरमें कोई शुभ ग्रह बैठे हो तो तीस वर्षकी अवस्था होती है ॥ १८ ॥

क्षीणे प्रालेयभानौ यदि खलखचरो मृत्युगो
मृत्युनाथः केन्द्रस्थो लग्ननाथो निजबल-
रहितः खाश्वितुल्यं तदायुः । सौम्यैरापोक्लिम-
स्थैर्दिनमणिजविधू वैरिरन्ध्रालयस्थौ तुल्यं
कामाङ्कुशैः स्यादथ धनमृतिगौ रिःफगौ
पापखेटौ ॥ १९ ॥ हीनौ स्वभानुना वा यदि
हिममहसा व्योमनेत्रप्रमाणं केन्द्रस्थौ सूर्य-
मन्दौ यदि वपुषि कुजः पुष्पबाणाङ्कुशं
स्यात् । शुक्रेज्यावङ्गयातौ तनयभवनगौ

भौमपापावनायुर्जन्मेशः सार्कलग्ने खलशुभ-
सहितश्चेक्षितः स्यादनायुः ॥ २० ॥

चन्द्रमा क्षीण हो और क्रूर ग्रह आठवें घरमें बैठा हो और अष्टम घरका पति केन्द्रमें स्थित हो, लग्नका पति निर्बल हो तो बीस वर्षकी अवस्था होती है. शुभग्रह आपोक्लिम ३ । ६। ९ । १२ इन घरोंमें स्थित हों, शनि और चन्द्रमा ६ । ८ घरमें स्थित हों तो बीस वर्षकी अवस्था होती है. इससे अनन्तर दूसरे और आठवें घरमें तथा बारहवें घरमें राहु या चन्द्रसे रहित क्रूरग्रह बैठे होवें तो बीस वर्षकी आयु होती है. यदि सूर्य, शनि केन्द्रमें स्थित हों और मंगल लग्नमें हो तो २० वर्षकी अवस्था होती है. शुक्र, बृहस्पति लग्नमें हों, मंगल और पापग्रह (शनि) दोनों पांचवें घरमें हों तो कुछ भी आयु नहीं होती अर्थात् स्वल्प आयु हो. जन्मराशिका स्वामी सूर्यसहितहुए लग्नमें बैठा हो और अन्य पापग्रह तथा शुभग्रहोंसे युक्त वा दृष्ट हों तो स्वल्प (बहुत कम) आयु होती है ॥ १९ ॥ २० ॥

यत्संप्रोक्तं योगजं पूर्वमायुर्होरापारावारपार-
ङ्गमज्ञैः । तस्मादायुः सारभूतं यदेतत्पुण्या-
चारश्लोकभाजां नराणाम् ॥ २१ ॥

जातकरूपी समुद्रके पारको पहुंचनेवाले पण्डित जनोंने पहले जो योगोंसे प्राप्तहुई आयु कही है वही पूर्वोक्त सार-रूप यह आयु सदाचार धर्ममें युक्त रहनेवाले जनोंकी इसी प्रकारसे होती है ॥ २१ ॥

बलाबलविवेकेन पुष्करालयशालिनाम्।
सुमनोभिरिदं देश्यमायुर्धर्मादिशालिनाम् ॥२२

सूर्य आदि ग्रहोंके बलाबलका विचारपूर्वक यह आयुर्योग उत्तमचित्तवाले जनोंने धर्मात्माजनोंको बताना चाहिये अर्थात् पाप करनेवालोंके यह योग नहीं मिलता है ॥ २२ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलङ्काराख्ये जातके मञ्जुलेऽस्मिन्। आयुर्दायः श्रीगणेशेन वर्यैर्वृत्तैर्युक्तो बाहुपक्षैः प्रणीतः ॥ २३॥

इति श्रीजातकालंकारे पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

मनोहरछन्दोंकरके रचेहुए, पंडितजनोंको प्रसन्नकरनेवाले मनोहर इस जातकालंकारनामक ग्रंथमें श्रीगणेशकविने उत्तम बाईस श्लोकोंकरके आयुर्दाय अध्याय रचा है ॥ २३ ॥

इति श्रीजातकालङ्कारभाषाटीकायां पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

भावाध्यायः ६.

लग्नाधीशेऽर्थगे चेद्धनभवनपतौ लग्नयातेऽर्थवान् स्याद्बुद्ध्याचारप्रवीणः परमसुकृतकृत् सारभृद्भोगशीलः। भ्रातृस्थानेऽङ्गनाथे सहजभवनपे लग्नयातेऽल्पशक्तिः सद्बन्धू राजपूज्यः कुलजनसुखदो मातृपक्षेण युक्तः ॥१॥

लग्नका पति धनस्थानमें बैठा हो और धनस्थानका पति लग्नमें हो तो वह नर धनवान् होता है, बुद्धिके आचरणमें

निपुण, उत्तम सुकृत करनेवाला. बलवान् और भोगशील (पदार्थ भोगनेवाला) होता है. लग्नका पति तीसरे घरमें हो और तीसरे घरका पति लग्नमें पडा हो तो अल्पबलवाला और श्रेष्ठ बंधुजनोंसे युक्त हो, कुलके जनोंको सुख देनेवाला और मातृपक्ष (मामा नाना आदिकों) से संयुक्त होता है ॥ १ ॥

तुर्येशे लग्नयाते तदनु तनुपतौ तुर्यगे स्यात् क्षमावान् ताताज्ञाराजकार्यप्रगुण-मतियुतः सद्गुरुः स्वीयपक्षः । लग्नस्थे सूनुनाथे तनुजपदगते लग्ननाथे मनस्वी विद्यालंकारयुक्तो निजकुलविदितो ज्ञानवान् मानसक्तः ॥ २ ॥

चौथे घरका पति लग्नमें पडे और लग्नका पति चौथे घरमें पडे तो क्षमा (शांति) वाला होवे. पिताकी आज्ञामें और राजकार्यमें सरल बुद्धिवाला रहे, श्रेष्ठ गुरुवाला अथवा श्रेष्ठ जनोंका गुरु हो और अपने पक्षमें स्थित (कायम) रहे. पंचम घरका पति लग्नमें स्थित हो और लग्नका पति पंचम घरमें स्थित हो तो उत्तम मनवाला, विद्यासे विभूषित, अपने कुलमें विख्यात, ज्ञानवान् और अभिमानयुक्त होता है ॥ २ ॥

षष्ठेशे लग्नयाते तदनु तनुपतौ षष्ठगे व्याधि-हीनो नित्यं द्रोहादिसक्तो वपुषि स बलवान् द्रव्यवान् संग्रही स्यात । मूर्तीशे कामयाते

मदनसदनपे मूर्तिगे तातसेवी लोलस्वान्तो-
ऽङ्गनायां भवति हि मनुजः सेवकः शालकस्य ३

छठे घरका पति लग्नमें हो और लग्नका पति छठे घरमें बैठा होवे तो रोगी नहीं होताहै और हमेशह द्रोह (छल) आदि करनेमें आसक्त, शरीरमें बलवान् तथा संग्रह करनेवाला होता है. लग्नका पति सातवें घरमें बैठा हो और सातवें घरका पति लग्नमें पडा हो तो वह मनुष्य पिताकी सेवा करनेवाला स्त्रीविषें चंचलमनवाला और शालकके काम करनेवाला होता है ॥ ३ ॥

अङ्गेशे रन्ध्रयाते निधनगृहपतावङ्गगे द्यूत-
बुद्धिः शूरश्चौर्यादिसक्तो निधनपदमियाद्भू-
पतेर्लोकतो वा । देहाधीशे शुभस्थे शुभ-
भवनपतौ देहसंस्थे विदेशी धर्मासक्तो
नितान्तं सुरगुरुभजने तत्परो राजमान्यः॥४॥

लग्नका पति आठवें घरमें हो और आठवें घरका पति लग्नमें हो तो जुवा खेलनेमें बुद्धिवाला शूर वीर चोरी आदि करनेमें निपुण हो और राजासे अथवा लोगोंसे मृत्युको प्राप्त हो. लग्नका पति नववें घरमें हो तो विदेशमें वास करे और निरन्तर धर्ममें आसक्त रहे. देवताके पूजनमें, गुरुकी सेवामें तत्पर रहे तथा राजासे मान्य होता है ॥ ४ ॥

कर्मस्थे लग्ननाथे गगनभवनपे लग्नगे
भूपतिः स्यात् ख्यातो लाभे च रूपे गुरु-
भजनरतो लोलुपो द्रव्यनाथः । लाभेशे

लग्नयाते तनुभवनपतौ लाभसंस्थे सुकर्मा
दीर्घायुः क्षोणिनाथः शुभविभवयुतः को-
विदो मानवः स्यात् ॥ ९ ॥

लग्नका पति दशवें घरमें हो और दशवें घरका पति लग्नमें हो तो राजा होता है, लाभ करनेमें और उत्तम रूपमें प्रसिद्ध (विख्यात) हो, गुरुकी सेवामें प्रीतिवाला, चंचल चित्त-वाला और द्रव्यका अधिपति होता है. ग्यारहवें घरका पति लग्नमें हो और लग्नका पति ग्यारहवें घरमें हो तो सुन्दर कर्म-वाला तथा दीर्घ आयुवाला होता है. राजा हो अथवा वह मनुष्य घरमें हो तो सुन्दरकर्मवाला सुन्दर ऐश्वर्यसे युक्त हो, धीरजवान् और पंडित होता है ॥ ९ ॥

लग्नेशे रिःफयाते व्ययसदनपतौ लग्नगे सर्व-
शत्रुर्बुद्ध्या हीनो नितान्तं कृपणतरमतिर्द्रव्य-
नाशी विलोलः । इत्थं तातादिकानामपि
जनुषि तथा खेचराणां हि योगाद्वाच्यं होरा-
गमज्ञैस्तदनु तनुपयुग् भार्गवे राजपूज्यः ॥१०॥

लग्नका पति बारहवें घरमें हो और बारहवें घरका पति लग्नमें हो तो सब जनोंका शत्रु हो अथवा सब जन उसके शत्रु होते हैं, वह निरन्तर बुद्धिहीन होता है, अत्यन्त कृपण-बुद्धि हो और द्रव्यका नाश करनेवाला तथा चंचल स्वभाव-वाला होता है. इसी प्रकारसे जन्मसमयमें ग्रहोंके योगसे पिता आदिकोंका शुभाशुभ फल जातकशास्त्रवेत्ता पंडितों बतावें,

जैसे पिताका घर दशवां है उसको लग्न समझे, ११ को धन-भवन समझे फिर पूर्वोक्त सब योगोंको विचारके पिताका सब हाल कहे. इसी प्रकार पुत्र आदि भवनसे पुत्र आदिकोंका हाल कहना और लग्नेशसे युक्तहुआ शुक्र ६ । ८ । १२ इन घरोंके विना अन्य किसी घरमें बैठा हो तो वह नर राजपूज्य होता है अर्थात् मनोवांछित फलोंकी प्राप्तिवाला होता है ॥६॥

एवं स्वमत्या सुफलप्रबोधं श्रीजातकाल-
ङ्करणं मनोज्ञम् । वृत्तैरनन्तेशमितैर्निबद्धं
मया मुदे दैवविदामुदारम् ॥ ७ ॥

मैं (गणेशकवि) ने ऐसे अपनी बुद्धिसे सुन्दर फलोंको कहने-वाला पदपदार्थोंसे मनोहर यह जातकालंकार दैवज्ञों (ज्योतिषि-यों)के आनन्दके वास्ते एकसौदश श्लोकोंकरके रचा है ॥७॥

पुष्करालयवशा गुणसारा जातकोक्तिरम-
लेव मराला। संस्कृता विहरतां भवतां मे
मानसेऽतिसरले सुकवीनाम् ॥ ८ ॥

पुष्करालय अर्थात् ग्रहोंके अधीन अर्थात् शुभाशुभसूचक ग्रहोंकरके उपयुक्तहुई गुणोंकी साररूपा संस्कृता अर्थात् मनों-हर वाणीसे शुद्ध कीहुई ऐसी मेरी यह जातकोक्ति (जातक-फलकथनरूपा वाणी) सुन्दर कवियोंके तुम्हारे अत्यन्त सरल मानस (हृदय) में क्रीडा करे. कैसे कि, जैसे पुष्कर (जलस्थान) में रहनेवाली, गुणसारा और अमला (शुद्धा दोषरहिता), संस्कृता (स्वभावसे रुचिर) ऐसी हंसी मानससरोवरमें क्रीडा कियाकरती है तैसे, यहां इस श्लोकमें पूर्णोपमालंकार है॥८

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलङ्काराख्ये जातके मञ्जुलेऽस्मिन् । भावाध्यायः श्रीगणेशेन वर्यैर्वृत्तैर्युक्तोऽष्टाभिरेष प्रणीतः ॥ ९ ॥

इति श्रीजातकालङ्कारे षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

मनोहर छंदोंकरके रचे हुए पंडितजनोंको प्रसन्न करनेवाले मनोहर इस जातकालंकारनामक ग्रंथमें श्रीगणेशकविने उत्तम आठ श्लोकोंकरके यह भावाध्याय रचा है ॥ ९ ॥

इति श्रीजातकालंकारभाषाटीकायां षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वंशाध्यायः ७.

अभूदवनिमण्डले गणकमण्डलाखण्डलः श्रुतिस्मृतिविहारभूर्विबुधमण्डलीमण्डनम् । प्रचण्डगुणगुर्जराधिपसभाप्रभातप्रभाकवीन्द्रकुलभूषणं जगति काह्नजीकोविदः ॥ १ ॥

अवनिमंडल (पृथ्वीतल) में काह्नजी नामक पंडित भया. वह जगत्में ज्योतिषशास्त्रके प्रतिपादन करनेवाला, पण्डितोंकी मंडलीका मण्डन, शोभादायक, प्रचंडगुणवाले गुर्जर देशके अधिपति राजाकी सभामें प्रभातसमयके उजियालेके समान प्रकाशवाला, कवींद्रजनोंके कुलका आभूषण ऐसा होता भया॥ १॥

भारद्वाजकुले बभूव परमं तस्मात्सुतानां त्रयं ज्यायांस्तेष्वभवद् ग्रहज्ञतिलकः श्रीसूर्यदासः सुधीः । श्रीमान् सर्वकलानिधि

स्तदनुजो गोपालनामाऽभवच्छ्रीमद्दैवविदां वरस्तदनुजः श्रीरामकृष्णोऽभवत् ॥ २ ॥

सो यह भारद्वाज कुल (गोत्र) में होताभया, इसके तीन पुत्र भये तिनमें बडा दैवज्ञोंमें श्रेष्ठ श्रीमान् सूर्यदास पंडित होता भया, तिसका छोटा भाई श्रीमान् सब कलाओंका निधि (खजानारूप) गोपालनामक होताभया, तिससे छोटा श्रीमद्दैवज्ञोंमें श्रेष्ठ श्रीरामकृष्ण नामक होता भया ॥ २ ॥

शाके मार्गणरामसायकधरा १५३५ संख्ये नभस्ये तथा मासे ब्रध्नपुरे सुजातकमिदं चक्रे गणेशः सुधीः । छन्दोलंकृतिकाव्यनाटककलाभिज्ञः शिवाध्यापकस्तत्र श्रीशिवविन्मुदे गणितभूर्गोपालसूनुः स्वयम् ॥३॥

इनमें गोपालनामक पंडितका पुत्र छंद, अलंकार, नाटक, कला (चित्रकर्म) इनको जाननेवाला और शिवनामक आचार्यका शिष्य ज्योतिषसिद्धांतशास्त्रको जाननेवाला, गणेशनामक कवि श्रीशिवनामक पंडितवरके आनंदके वास्ते पांच, तीन, पांच, एक संख्यामें प्रमित अर्थात् पंद्रह सौ पैंतीसके शाकेमें भाद्रपद महीनेमें सूर्यपुरविषे इस सुन्दर जातक (जातकालंकार) को करता भया ॥ ३ ॥

ये पठिष्यन्ति दैवज्ञास्तेषामायुःसुखे शिवम् । भूयात्कैरवकुन्दाभा सुकीर्तिः सर्वतोदिशम् ४॥

१–श्रीशिवसंमुदे इति पाठान्तरम् ।

जो दैवज्ञजन इसको पढेंगे तिनके आयु सुखमें कल्याण बना रहो और कमल तथा कुन्दके पुष्पसमान सुन्दर स्वच्छ कीर्ति सब दिशाओंमें हो ॥ ४ ॥

हृद्यैः पद्यैर्गुम्फिते सूरितोषेऽलङ्काराख्ये जातके मञ्जुलेऽस्मिन्। वंशाध्यायः श्रीगणेशेन वृत्तैर्युक्तो वेदैः शैलसंख्यः प्रणीतः ॥ ५ ॥

इति श्रीगणेशेन विरचिते जातकालङ्कारे सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

मनोहर छन्दोंकरके रचेहुए और पंडितजनोंको संतुष्ट करनेवाले इस मनोहर जातकालंकारविषे चार श्लोकोंकरके श्रीगणेशकविने यह सातवां वंशाध्याय अर्थात् अपने वंशविख्यातिका अध्याय रचा है ॥ ५ ॥

इति श्रीवेरीपुरनिवासिगौडवंशोद्भवद्विजशालग्रामात्मजबुधवसतिरामशास्त्रिविरचितजातकालङ्कारभाषाटीकायां सप्तमोऽध्यायः ॥ ७॥

अब्दे खबाणाऽङ्कधरामिते वैशाखे सिते नागतिथौ भृगौ च।
वस्त्यादिरामांतबुधेन भाषाटीका कृता स्वल्पधियां मुदे वै ॥

इति श्रीभाषाटीकासहितो जातकालङ्कारः समाप्तः ॥